चन्दामामा
दिसम्बर १९६९
75 P
Vapa

चन्दामामा

दिसंबर १९६९

विषय - सूची

★

एक प्रति ०-७५ पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ९-००

स्वाद ऐसा कि बच्चे
खुशीसे
नाच उठें
साठे माल्टेक्स बिस्कुट
साठे बिस्कुट
एण्ड चॉकलेट
कं. लि., पूना-२
SATHE
BISCUITS

LIFEBUOY
for health
लाइफ़बॉय है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ
लाइफ़बॉय मैल में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है
हिंदुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन
लिंटास- L. 59-77 HI

बच्चे को स्वस्थ तथा प्रसन्न रखने के लिये उसका पालन-पोषण

नौनिहाल

बेबी टॉनिक पर कीजिये।

नौनिहाल बेबी टॉनिक में वह सभी आवश्यक विटामिन तथा दवाएं सम्मिलित हैं जो शरीर को स्वस्थ रखने, हड्डियों को मजबूत बनाने तथा दांत निकलने के कठिन दिनों में आवश्यक होती हैं।

आज ही से अपने बच्चे को नौनिहाल बेबी टॉनिक दीजिये। इससे आपका बच्चा स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेगा।

ख़तरा मोल न लीजिए!

घाव, खरोंच, छालों, फोड़े-फुंसियों पर दवावाली

बैंड-एड* ब्राण्ड ड्रेसिंग्स लगाइए
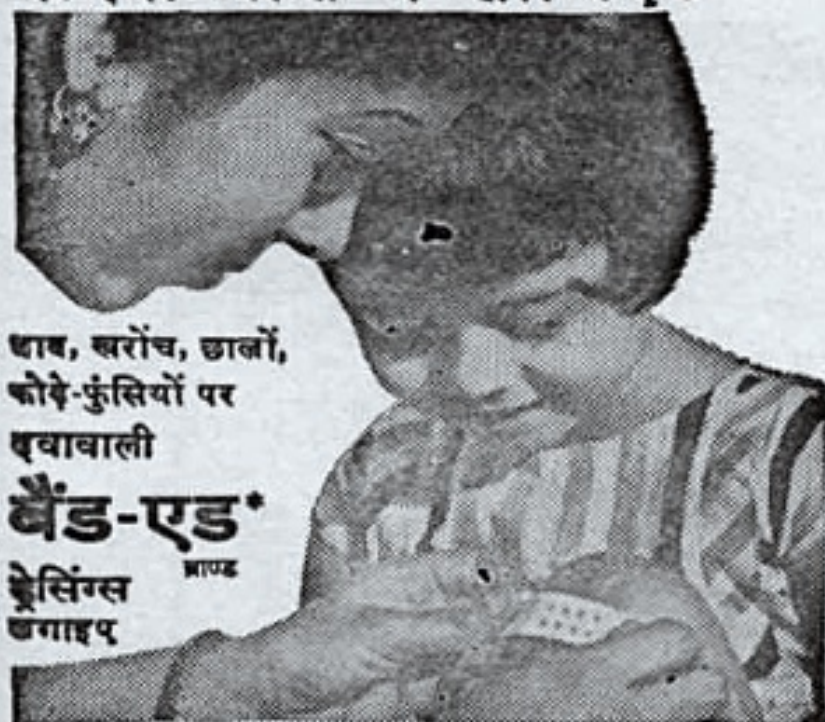
बैंड-एड ब्राण्ड ड्रेसिंग्स घाव के भरने में मदद करती हैं... उसे ढँक कर साफ़-सुथरा रखती हैं।

इस्तेमाल के लिए तैयार

बैंड-एड* ब्राण्ड ड्रेसिंग्स

स्ट्रिप, स्पॉट और पैच के आकार में आती हैं।

मिले-जुले आकारों की १० ड्रेसिंग्स का पैक

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन लिमिटेड
३०, फ़ॉर्जेट स्ट्रीट, बम्बई-२६

*ट्रेडमार्क © J&J India

Cadbury's
MILK
CHOCOLATE

पिंकी, बबलू, चुन्नू, मुन्नू
सब पढ़ते हैं

चंपक

और तुम ?

नया अंक पढ़ कर तो देखो! चंपक की चटपटी कहानियां, नईनई बातें सिखाने वाले लेख, मन लुभा लेने वाली पहेलियां, सूझबूझवाले बहुत से स्तंभ और छका देने वाले चीकू के कारनामे तुम्हें भी इतने पसंद आएंगे कि तुम चंपक का हर अंक खरीदे बिना न रह सकोगे!

बच्चों को देवों, दानवों, राक्षसों, जादूटोनों व छलकपट की कहानियों के जहर से बचा कर देशभक्त, साहसी व चरित्रवान बनाने वाली पत्रिका

नमूने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए डाक खर्च के लिए 15 पैसे के डाकटिकट रख कर यह कूपन पोस्ट कर दो :

दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-५५ :
चंपक की नमूने की प्रति इस पते पर भेज दीजिए :
नाम : ---------------------------
पता : ---------------------------

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
संसार में जितने भी महापुरुष हुए, वे सब एक न एक समय बच्चे ही थे। बचपन में उन महापुरुषों ने तुम लोगों जैसा जीवन बिताया। पर क्यों वे महापुरुष हुए? चूंकि उन लोगों ने ऐसे महान कार्य किये जिनसे हमारा देश व समाज उन्नत हुआ। संसार में हमारी प्रतिष्ठा बढ़ी। अब हमारे देश की प्रतिष्ठा को बढ़ाने की जिम्मेदारी तुम लोगों पर है! हमारा देश बड़ी आशा और विश्वास के साथ तुम्हारी ओर देख रहा है!
वर्ष: २१ दिसम्बर १९६९ अंक: ४
CHITRA

नमक हराम

एक दिन एक शिकारी जंगल में शिकार खेलने जा रहा था। एक गड्ढे में उसे तरह-तरह की आवाज़ें सुनायी दीं। शिकारी ने झांक कर उस गड्ढे में देखा।

"भैया, हमें बचाइये, तुम्हारा भला करेंगे।" एक साथ कई कंठ सुनायी दिये।

वह गड्ढा बड़ा गहरा था। उसमें शिकारी को एक आदमी, एक चीता, एक सांप और एक चूहा दिखाई दिये। गड्ढा सीधे व गहरा था, इसलिए भीतर के प्राणी प्रयत्न करके भी ऊपर नही आ पा रहे थे।

"तुम लोगों की मदद क्यों करनी है? चूहे हमारे अनाज खा डालते हैं। सांप हमें डँस कर मार डालते हैं। चीते हमारे बछड़ों को उठा ले जाते हैं, हमें डराते भी हैं। आदमी तो हमारी जाति का है, इसलिए में उसकी मदद करूँगा।" शिकारी ने कहा।

लेकिन बाक़ी जानवरों ने भी बड़ी दीनता से शिकारी की मिन्नत की, इसलिए शिकारी का दिल पिघल गया। उसने मज़बूत लताओं को लाकर उन्हें रस्सी जैसा बनाया और उसे गड्ढे में उतार कर चारों प्राणियों को बचाया।

"हम तुम्हारे लिए पुरस्कार लायेंगे।" यह कहकर चूहा, साँप और चीते चले गये। परंतु गड्ढे से बाहर आते ही आदमी बोला—"महाशय, मैं बड़ा गरीब हूँ, खाने को भी नहीं है। मैं तुम्हारी बिलकुल मदद नहीं कर सकता।"

शिकारी उस ग़रीब आदमी को अपनी झोंपड़ी में ले गया और उसे खिलाने-पिलाने लगा।

दूसरे दिन चीता अपने शिकार किये हुए एक जानवर को शिकारी की झोंपड़ी में ले आया और बोला—"आज से तुमको

जगदीश वर्मा

शिकार खेलने की ज़रूरत नहीं, मैं रोज तुम्हारे लिए शिकार करके माँस लाया करूंगा।" यह कहकर चीता चला गया।

इसके बाद साँप ने आकर कहा—"मैं तुम्हारे लिए एक चूर्ण लाया हूँ, इस नमकहराम के खून में घोल कर साँप के काट की जगह मल दे, तो हर तरह के साँप का ज़हर उतर जायगा।" यह कहकर कोई चूर्ण शिकारी के हाथ में दे साँप चला गया।

इसके बाद चूहा कोई गठरी खींचते ले आया और बोला—"इसमें कई गहने हैं। मैंने कई दिनों से इन्हें इकट्ठा कर रखा है। इनको बेचकर तुम अपनी ज़िंदगी आराम से बिताओ।" यह कहकर चूहा भी चला गया। उस गठरी में कई क़ीमती चाँदी व सोने के गहने थे।

"इन गहनों को पाकर मैं अमीर बन गया हूँ। अब मुझे इस झोंपड़ी में रहने की कोई ज़रूरत नहीं।" यह सोचकर शिकारी ने सब गहनों को बेच दिया। उस धन से एक बढ़िया मकान बनवा कर आराम से दिन काटने लगा। ग़रीब आदमी अब भी शिकारी के घर में रह रहा था।

परंतु वह बड़ा नमकहराम था। उसे शिकारी की संपत्ति देख ईर्ष्या हुई। वह इस बात का इंतज़ार करने लगा कि शिकारी की बुराई करने का कोई मौक़ा मिले।

इतने में हुआ क्या, पास के नगर-पाल के घर चोरी हो गयी। नक़द और गहने भी चुराये गये थे। नगर-पाल ने सब जगह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो आदमी चोर को पकड़वा देगा, उसे बढ़िया इनाम दिया जायगा।

शिकारी के घर में रहनेवाले ग़रीब आदमी ने नगर-पाल के पास जाकर कहा—"हुज़ूर, आपके घर जिस आदमी ने चोरी

की, मैं उसे जानता हूँ। उसने आपके गहने बेचकर एक अच्छा महल बनवा लिया है। आप चाहें तो उस महल को देख सकते हैं।"

नगर-पाल ने अपने भटों को भेजकर शिकारी को बुलवा भेजा और पूछा—"बताओ, तुमने ऐसा बढ़िया महल कैसे बनाया? तुम्हें रुपये कैसे मिले?"

शिकारी ने चार प्राणियों को गड्ढे में से निकालने की सारी कहानी नगर-पाल को कह सुनायी।

नगर-पाल ने सारी कहानी सुनकर कहा—"तुम्हारी इस मनगढंत कहानी पर कौन यक़ीन करेगा? तुम्हारी बातें सुनने से लगता है कि तुम चोर हो। इस आदमी को पहले जेलखाने में डाल दो, बाद को इसका फ़ैसला किया जायगा।

उसी समय भीतर नौकरों ने दौड़ते आकर कहा कि नगर-पाल की लड़की को साँप ने डँस लिया है और वह बेहोश पड़ी हुई है।

नगर-पाल एक दम परेशान हो उठा।

"आप चिंता न कीजिये। मेरे पास ज़हर उतारने की दवा है। मैंने कहा था न कि गड्ढे में से मैंने जिस साँप को बाहर निकाला, उसीने यह दवा दी है। मुझ पर झूठा दोषारोपण करनेवाले इस नमकहराम के खून में घोल कर यह चूर्ण साँप के डँसने की जगह मल दिया जाय तो आपकी पुत्री खतरे से बच जायगी।" शिकारी ने समझाया।

नगर-पाल ने वैसा ही करने की अनुमति दी। दवा मलने पर नगर-पाल की लड़की होश में आकर बैठ गयी।

आखिर यह साबित हुआ कि शिकारी ने जो कुछ कहा, सब सत्य है। नगर-पाल ने शिकारी से क्षमा माँगी और नमकहराम को जेल में डाल दिया।

शिकार खेलने की ज़रूरत नहीं, मैं रोज़ तुम्हारे लिए शिकार करके माँस लाया करूँगा।" यह कहकर चीता चला गया।

इसके बाद साँप ने आकर कहा—"मैं तुम्हारे लिए एक चूर्ण लाया हूँ, इस नमकहराम के खून में घोल कर साँप के काट की जगह मल दे, तो हर तरह के साँप का ज़हर उतर जायगा।" यह कहकर कोई चूर्ण शिकारी के हाथ में दे साँप चला गया।

इसके बाद चूहा कोई गठरी खींचते ले आया और बोला—"इसमें कई गहने हैं। मैंने कई दिनों से इन्हें इकट्ठा कर रखा है। इनको बेचकर तुम अपनी ज़िंदगी आराम से बिताओ।" यह कहकर चूहा भी चला गया। उस गठरी में कई क़ीमती चाँदी व सोने के गहने थे।

"इन गहनों को पाकर मैं अमीर बन गया हूँ। अब मुझे इस झोंपड़ी में रहने की कोई ज़रूरत नहीं।" यह सोचकर शिकारी ने सब गहनों को बेच दिया। उस धन से एक बढ़िया मकान बनवा कर आराम से दिन काटने लगा। ग़रीब आदमी अब भी शिकारी के घर में रह रहा था।

परंतु वह बड़ा नमकहराम था। उसे शिकारी की संपत्ति देख ईर्ष्या हुई। वह इस बात का इंतज़ार करने लगा कि शिकारी की बुराई करने का कोई मौक़ा मिले।

इतने में हुआ क्या, पास के नगर-पाल के घर चोरी हो गयी। नक़द और गहने भी चुराये गये थे। नगर-पाल ने सब जगह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो आदमी चोर को पकड़वा देगा, उसे बढ़िया इनाम दिया जायगा।

शिकारी के घर में रहनेवाले ग़रीब आदमी ने नगर-पाल के पास जाकर कहा—"हुज़ूर, आपके घर जिस आदमी ने चोरी

की, मैं उसे जानता हूँ। उसने आपके गहने बेचकर एक अच्छा महल बनवा लिया है। आप चाहें तो उस महल को देख सकते हैं।"

नगर-पाल ने अपने भटों को भेजकर शिकारी को बुलवा भेजा और पूछा– "बताओ, तुमने ऐसा बढ़िया महल कैसे बनाया? तुम्हें रुपये कैसे मिले?"

शिकारी ने चार प्राणियों को गड्ढे में से निकालने की सारी कहानी नगर-पाल को कह सुनायी।

नगर-पाल ने सारी कहानी सुनकर कहा–"तुम्हारी इस मनगढंत कहानी पर कौन यक़ीन करेगा? तुम्हारी बातें सुनने से लगता है कि तुम चोर हो। इस आदमी को पहले जेलखाने में डाल दो, बाद को इसका फ़ैसला किया जायगा।

उसी समय भीतर नौकरों ने दौड़ते आकर कहा कि नगर-पाल की लड़की को साँप ने डँस लिया है और वह बेहोश पड़ी हुई है।

नगर-पाल एक दम परेशान हो उठा।

"आप चिंता न कीजिये। मेरे पास ज़हर उतारने की दवा है। मैंने कहा था न कि गड्ढे में से मैंने जिस साँप को बाहर निकाला, उसीने यह दवा दी है। मुझ पर झूठा दोषारोपण करनेवाले इस नमकहराम के खून में घोल कर यह चूर्ण साँप के डँसने की जगह मल दिया जाय तो आपकी पुत्री खतरे से बच जायगी।" शिकारी ने समझाया।

नगर-पाल ने वैसा ही करने की अनुमति दी। दवा मलने पर नगर-पाल की लड़की होश में आकर बैठ गयी।

आखिर यह साबित हुआ कि शिकारी ने जो कुछ कहा, सब सत्य है। नगर-पाल ने शिकारी से क्षमा माँगी और नमकहराम को जेल में डाल दिया।

धन की प्यास

यह कहानी उन दिनों की है जब हारून अल रशीद बगदाद का खलीफ़ा था। उसके दरबार में हसन नामक एक कर्मचारी था। उसकी औरत का नाम फ़ातिमा था। ये दोनों ऐसे लोभी थे कि पैसे बचाने की फ़िक्र में भरपेट खाते भी न थे। हसन जो कुछ कमा लाता उसे ज्यों का त्यों बचा रखते। वे दोनों ऐसी चीज़ें खाते जिन्हें कुत्ते भी खाने से मुंह मोड़ते थे। ऐसे घर में रहते जो नरक की याद दिलाता। इस तरह दो बोरे सोना इकट्ठा हुआ। आधी रात के समय दोनों सोने को देख खुशी के मारे फूले न समाते।

धन के इकट्ठे होने के साथ ही साथ उनमें धन के प्रति प्यास भी बढ़ती गयी। एक दिन फ़ातिमा के दिमाग में अचानक एक उपाय सूझा। वह रोज जिस दुकान से खाने की चीज़ें खरीदती थी, उस दूकानदार के पास जाकर रोते हुए बोली–"भैया, मेरे पति को अकारण ही जेल में डाल दिया गया है। मैं अपना दुखड़ा किसके आगे जाकर रोऊँ? मैं अकेली हूँ। पास में ताँबे का एक सिक्का तक नहीं है। मैं अपने दिन कैसे काटूँ?"

दूकानदार ने फ़ातिमा पर रहम खाकर खाने की चीज़ें मुफ़्त में दे दीं। लेकिन उनकी समझ में न आया कि ऐसे धर्मात्मा खलीफ़ा ने हसन के साथ अन्याय क्यों किया। परंतु उस रात का खाना हसन और फ़ातिमा को अमृत के समान प्रतीत हुआ, क्योंकि वह खाना उन्हें मुफ़्त में मिल गया था।

इस तरह कुछ दिन तक दूकानदारों ने फ़ातिमा को खाने की चीज़ें मुफ़्त में ही दे दीं। आखिर एक दिन उसे समझाया–"देखो फ़ातिमा! ऐसे कितने दिन चल सकते हैं? तुम्हारे पति को क्यों जेल में

गिरिधर पाठक

डाल दिया गया है। सही कारण बताओ, हम उसे छुड़ाने की कोशिश करेंगे।"

फ़ातिमा ने घबराहट का अभिनय करते हुये जवाब दिया—"आप का पुन्न होगा। यह बात खलीफ़ा के कानों तक पड़ने न दीजियेगा! हमारा घर तबाह हो जायगा।"

"ऐसी बात हो तो यह कोशिश करके देखो तो सही कि तुम्हारे रिश्तेदार इस विपत्ति के समय मदद देते हैं कि नहीं।" दूकानदारों ने समझाया।

फ़ातिमा ने समझ लिया कि आइंदा दूकानदार उसकी मदद नहीं करेंगे और उनकी मेहर्बानी पर निर्भर रहेंगे तो उन्हें संदेह भी हो सकता है। उस शहर में हसन और फ़ातिमा के रिश्तेदार ज़रूर थे। मगर अपनी कंजूसी के कारण वे अपने रिश्तेदारों से संबंध कभी के तोड़ चुके थे। फिर भी फ़ातिमा ने अपने रिश्तेदारों के घर जाकर अपना दुखड़ा सुनाया कि उसके पति को जेलखाने में डाल दिया गया है। उन सबने भी उस पर रहम खाकर यथाशक्ति धन और खाने के पदार्थ दिये। अमीरों ने अच्छी खासी मदद दी, तो गरीबों ने भी थोड़ी बहुत सहायता की। उनकी भी समझ में नहीं आया कि खलीफ़ा ने अपने नौकर के साथ ऐसा अन्याय क्यों कर किया है।

अब उनका लोभ इस हालत तक पहुँचा कि हसन को मुँह अंधेरे घर छोड़कर दरबार में जाना पड़ता और अंधेरा फैलने पर ही घर लौटना पड़ता था। नहीं तो कोई जान-पहचान का आदमी उसे देख सकता था। इसलिए उसे अज्ञातवास करना पड़ा।

कुछ दिन बीत गये। रिश्तेदारों ने भी फ़ातिमा से कहा—"ऐसे और कहाँ तक चल सकता है? हम सब तुम्हारी मदद करेंगे। तुम जाकर खलीफ़ा के पैरों पड़कर प्रार्थना करो। वे तुम्हारे पति को छोड़ देंगे।"

"बाप रे बाप! यह बात खलीफ़ा के कानों में पड़े तो वे मेरे पति को मार डालेंगे।" फ़ातिमा ने जवाब दिया।

अब रिश्तेदारों पर निर्भर रहना भी मुश्किल हो गया। उस रात को पति-पत्नी ने आगे के कार्यक्रम पर विचार किया। अब उनके सामने केवल चोरी करने का उपाय बच रहा।

खलीफ़ा की कचहरी में मानिक भरे थे। हसन ने दूसरे दिन घर लौटते वक़्त एक मानिक मुंह में डाल लिया और घर लाकर उसे आनी पत्नी के हाथ दिया।

"हमारे कई अमीर रिश्तेदार हैं। मैं इस मानिक को दूकान में ले जाकर यह कहूँगी कि यह मानिक उन्हीं का है। और इसे बेचकर सोना ले आऊँगी।" फ़ातिमा ने कहा।

फ़ातिमा जो मानिक बेचना चाहती थी, वह बड़ा क़ीमती था। इसीलिए दूकानदार ने फ़ातिमा को धन देकर तो भेज दिया, पर उस मानिक को अपने नौकर के हाथ खलीफ़ा के पास भेजकर पुछवाया-"यह मानिक आपके खजाने का तो नहीं है?"

झट चोरी का पता लग गया। हसन के घर राजभटों ने जाकर तलाशी ली। वहाँ के सोने के दो बोरों को जब्त किया, हसन तथा फ़ातिमा के हाथों में हथकड़ियाँ डालकर खलीफ़ा के सामने हाज़िर किया।

खलीफ़ा ने हसन से कहा-"कचहरी में तुमने जो चोरी की, उस अपराध में तुम्हारा सर उड़ा दिया जा सकता है। लेकिन तुम्हारी पत्नी ने झूठ बोलकर रहमदिल दूकानदारों तथा रिश्तेदारों के यहाँ से बहुत-सा धन वसूल किया है। तुम लोगों के पास दो बोरे सोना भरा था, फिर भी तुम लोगों ने कई लोगों से धन लूट लिया है। इस कारण से तुम दोनों को

फाँसी की सज़ा देनी है। लेकिन मैं तुम दोनों को जो सज़ा देता हूँ। वह यह है कि तुम दोनों को सोने के ये बोरे अपने अपने गले में लटकाने हैं।"

हसन और फ़ातिमा ने सोचा कि उन्हें बड़ी हल्की सज़ा मिल गयी है। राजभटों ने दो सोने के बोरे उनके गलों में बाँध दिया। बोरों के बोझ से उनके गले दुखने लगे। घर पहुँचते पहुँचते उन्हें लगा कि मानों उनके गले टूट से गये हैं।

उन दोनों के जाने के बाद खलीफ़ा ने शहर के सभी दूकानदारों के पास यह ताक़ीद भेज दी कि हसन और फातिमा से कोई सोना न खरीदें और सोना लेकर उन्हें खाने-पीने की चीज़ें न दें। इसके अलावा हमेशा उनके पीछे बारी बारी से पहरा देने चार सिपाही भी तैनात किया।

हसन और फ़ातिमा सोना लेकर किसी भी दूकान पर जाते तो वे उन्हें खाने की चीज़ें बेचते न थे। आखिर उन दोनों ने रास्ते पर गिरे केले के छिलके खाकर, नल का पानी पिया, इस तरह अपनी भूख-प्यास मिटाने लगे।

इस तरह दो दिन तक उन लोगों ने नरक की यातनाएँ भोगीं। तीसरे दिन खलीफ़ा के पैरों पर गिरकर विनती की– "हुज़ूर! यह सारा सोना लेकर मुझे फिर नौकरी दे दीजियेगा। हम दोनों को खाना-कपड़ा मात्र दीजिये, और कुछ नहीं चाहिये। हम इन्हीं से खुश रहेंगे।"

"तुम लोग एक बोरा सोना दूकानदारों को दे दो और दूसरा बोरा उन रिश्तेदारों को दो, जिन लोगों ने वक़्त पर तुम लोगों की मदद की।" खलीफ़ा ने आदेश दिया।

इसके बाद खलीफ़ा ने हसन और फ़ातिमा को एक बढ़िया घर व कपड़े दिये और हसन को नौकरी भी दी।

शिथिलालय

[२३]

[शिखिमुखी ने जांगला को खच्चर से बाँधकर आगे चलाने का आदेश दिया। दुपहर तक वे सब एक नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ पर एक चीता जांगला पर कूद पड़ा। चीते के साथ जांगला मगर-मच्छों से भरी नदी में लुढ़क पड़ा। उस वक्त नदी के दूसरे किनारे से बाणों की वर्षा होने लगी। बाद–]

नदी के दूसरे किनारे से बाणों की बौछार जांगला तथा चीते की ओर होते देख शिखिमुखी ने चकित होकर विक्रम को सावधान किया। उसे संदेद हुआ कि बाणों की बौछार करनेवाले लोग जांगला के दोस्त तो न होंगे। वे दोस्त और कोई नहीं, शिथिलालय के पुजारी के दल के होंगे। उन लोगों ने पहले से ही यह योजना बना रखी है।

"विक्रम, हमें नदी के किनारे से थोड़ा पीछे हटना अच्छा होगा। नदी के पार से बाण छोड़नेवाले पुजारी के दल के लोग हैं। हम उनके बाणों की मार की परिधि में हैं। खबरदार!" शिखिमुखी ने कहा।

शिखिमुखी की चेतावनी पाकर विक्रमकेसरी अजित और वीरभद्र किनारे से दूर हट गये। नदी की

धारा में चीता और जांगला एक दूसरे से अलग हो गये। जांगला डूबते-उतरते, नदी के उस पार पहुँचने की कोशिश करने लगा। चीता छटपटाते धारा में बहता चला जा रहा था। कुछ मगर-मच्छ बाणों की चोट खाकर तैरते दूर हटने लगे।

इस हालत में पेड़ों की आड़ में से एक भारी भरकम व्यक्ति डोंगी को खींच लाया और नदी में छोड़ दी। उसके पीछे से दो आदमी दौड़ते आये और उस पर सवार हो डांडों से डोंगी को जांगला की ओर बढ़ाने लगे। डोंगी को खींचनेवाले व्यक्ति को देखते ही शिखिमुखी ने उसे पहचान लिया।

शिखिमुखी ने विक्रमकेसरी का ध्यान आकर्षित करते हुये कहा—"विक्रम, क्या तुमने उसे पहचान लिया? वह सवर गीध है। पुजारी का सेवक है! निशाना देखकर बाण इस तरह चलाओ जिससे उसका कलेजा छेद डाले।"

विक्रमकेसरी बाण चलाने के विचार से निशाना साधने लगा। इस बीच सवरगीध पाँच-छे फुट ऊँचाई पर एक ढाल पकड़कर, उस पर से सर उठाये शिखिमुखी की ओर देखकर बोला—"ओह, वह कौन है? शिखिमुखी है! शबर नेता शिवाल का लड़का? कहाँ शबर बस्ती और कहाँ ब्रह्मपुत्र की घाटी? मरना ही हो तो इतनी दूर आने की क्या जरूरत थी? व्यर्थ का प्रयत्न!"

सवर गीध की बात पूरी भी न हो पायी थी कि विक्रमकेसरी का बाण ढाल के ऊपरी भाग से जा लगा और नीचे गिर गया। उस आघात से सवर गीध उछलकर नीचे गिर पड़ा और बोला—"अरे, तुम लोगों को मेरी बातें सुनाई दे रही हैं? यह ढाल मामूली नहीं है!

पुजारी साहब ने मंत्र फूंक कर मुझे दिया है। इसके पीछे जो आदमी रहेगा, उसे जान का डर न होगा। समझें!"

विक्रमकेसरी धनुष पर एक और बाण चढ़ाकर छोड़ने ही वाला था कि सवर गीध के पास शिथिलालय का पुजारी आ पहुँचा।

पुजारी को देखते ही शिखिमुखी ने झट विक्रमकेसरी की ओर मुड़कर कहा–"विक्रम! अब तुम सवर गीध पर नहीं, शिथिलालय के पुजारी पर निशाना लगाओ। हम बाक़ी लोगों की खबर लेंगे।"

तुरंत शिखिमुखी, अजित और वीरभद्र ने भी अपने हाथों में धनुष-बाण लिये। सब घुटनों पर बैठकर बाण छोड़ने के लिए निशाना साधने लगे, तब पुजारी थोड़ा पीछे हटकर अट्टहास करते हुए बोला–"अरे मूर्खो! तुम्हारे बाण इतनी दूर आकर मुझे छू नहीं सकते! फिर भी कोशिश करो।" इसके बाद उसने अपने पास खड़े जंगली लुटेरों को इशारा किया।

लुटेरों ने जल्दी-जल्दी धनुष पर बाण चढ़ाये और शिखिमुखी के दल की ओर निशाना साधा। लेकिन उनके बाण

नदी में ही गिर पड़े। शिखिमुखी तथा उसके अनुचरों ने जो बाण चलाये, वे भी पुजारी के दल तक नहीं पहुँचे। इस तरह चार-पांच मिनट तक एक दूसरे के दल पर बाण चलाने के बाद दोनों ने समझ लिया कि इतनी दूर से बाण चलाने पर कोई फ़ायदा न होगा।

शिखिमुखी ने अपने अनुचरों को बाण छोड़ने से रोक दिया और कहा–"जैसे हमने सोचा था, शिथिलालय का पुजारी हमारा पीछा ही कर रहा है। हम से पहले ही उसने नदी पार की है। इसका मतलब है कि उसने अब तक गोलभरा गांव

पहुँचकर शिथिलालय के बारे में बहुत-कुछ जानकारी हासिल की होगी।"

"ऐसा ही लगता है। बड़ी होशियारी से जांगला को हमें सौंप दिया और उसके जरिये हमारे रहस्य भी जान लिये।" विक्रमकेसरी ने कहा।

"इस वक़्त हमारे सामने यही प्रमुख समस्या है कि कौन पहले शिथिलालय तक पहुँच जायेंगे? हमने सोचा था कि गोलभरा गाँव में शिथिलालय संबन्धी जानकारी प्राप्त करेंगे। अगर हम से पहले ही शिथिलालय का पुजारी वहाँ पहुँच गया तो भी हमारी कोई हानि न होगी! उसे शिथिलालय के निकट ही पकड़कर उसका अंत कर डालेंगे।" शिखिमुखी ने बताया।

नदी के उस पार पुजारी का दल तथा इस पार शिखिमुखी का दल परस्पर क्रोध से देखते खड़ा रह गया। यह तै हुआ कि उस हालत में एक दल दूसरे दल की हानि नहीं कर सकता। शिखिमुखी थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला–"विक्रम, हम लोग जांगला के कहे मुताबिक़ पहाड़ी घाटी की तरफ़ चल पड़ेंगे। गोलभरा गाँव तक पहुँचने के लिए यह घुमावदार रास्ता है, फिर भी दूसरा कोई उपाय नहीं है। मगर-मच्छों से भरी इस नदी को पार करना भी इसलिए खतरनाक है कि दुश्मन उस ओर हमारी ताक में बैठा हुआ है।"

शिखिमुखी का आदेश पाकर सब यात्रा की तैयारी में लग गये। अपने सारे सामान खच्चरों पर बांधकर नदी के किनारे से चलते हुये सूर्यास्त तक वे लोग पहाड़ी घाटी के निकट पहुँचे। वहाँ पर उन लोगों ने एक तलहटी देखी।

विक्रम और शिखिमुखी ने परस्पर चर्चा करके यह निर्णय किया कि अंधेरे

फैलते वक़्त संकरीली उस पहाड़ी तलहटी को पार करना खतरे से खाली नहीं है। हो सकता है कि उस संकरीली घाटी में शिलाओं की ओट में छिपे रहकर पुजारी का दल उनपर आक्रमण कर सकता है......

रात के दूसरे पहर तक सब ने भोजन करना समाप्त किया। इस डर से उन लोगों ने अलाव नहीं जलाये कि उसकी रोशनी में उनके पड़ाव का पता पुजारी के दल को लग जायगा। मगर एक के बदले दो-दो व्यक्तियों के द्वारा पहरा देने का निश्चय किया।

आधी रात तक दूर पर जंगली जानवरों के गर्जन सुनाई दे रहे थे, पर मनुष्यों की आहट उन्हें सुनाई न दी। इसके बाद नदी की दिशा से विचित्र ध्वनियाँ सुनाई देने लगीं। अजित और वीरभद्र ने सोचा कि नदी में मगर-मच्छ आहार की खोज में झगड़ा कर रहे हैं। लेकिन क्रमशः वे ध्वनियाँ तीव्र होती गयीं। इसलिए अजित और वीरभद्र तलवार लिये सतर्क होकर नदी के निकट पहुँचे।

अंधेरे से आवृत्त उस नदी में कुछ मानवों की आकृतियों के हिलते अजित और वीरभद्र ने देखा। ऐसा लगता था कि दुश्मन डोंगियों पर मानों नदी पार कर रहा हो! कभी कभी पानी में बुलबुलाहट हो रही थी, जिससे उन्होंने अनुमान लगाया कि दुश्मन बड़ी सावधानी से डांड़ें चला रहा है!

अजित और वीरभद्र ने सोचा कि खतरा बढ़ता जा रहा है। इसलिए वे विक्रम और शिखिमुखी को सावधान करने के लिए पीछे की ओर दौड़ने लगे। इतने में हुआ क्या, उन पर एक जाल फेंका गया। वे उस जाल में फँसने से बचने की कोशिश कर ही रहे थे कि वे ही खुद कसे गये। इस तरह के जालों का

उपयोग जंगली लोग जंगली हिरणों को पकड़ने के काम में लाते हैं।

अजित और वीरभद्र जाल में छटपटाते हुये अपने मालिकों को सावधान करने के लिए चिल्लाना ही चाहते थे कि दो मजबूत हाथों ने उनके कंठों को दबोच दिया। वे साँस न लेने की हालत में छटपटाने लगे।

"चिल्लाने की कोशिश मत करो। तुम्हारे दोनों नेताओं को हमने पहले ही बंदी बनाया है।" एक कंठ ने क्रोध से कहा। इतने में उनके पास दो और जंगली आ पहुँचे।

अजित और वीरभद्र ने देखा कि उन्हें बंदी बनानेवाले जंगली हाथी के चमड़े धारण किये हुये हैं। इसका मतलब है कि ये लोग शिथिलालय के पुजारी के दल के नहीं हैं। जैसे उन लोगों ने बताया कि इस के पहले ही विक्रम और शिखिमुखी को बंदी बनाया गया है, क्या यह सच हो सकता है?

दूसरे ही क्षण शिखिमुखी के पड़ाव की ओर से लाल कुत्ते की भूंक और कुछ लोगों की चिल्लाहटें सुनायी दीं, जिससे उनकी शंका जाती रही। थोड़ी देर तक वहाँ पर कोलाहल मचा रहा, फिर शांति फैल गयी। तब तक पड़ाव की ओर देखनेवाला जंगली इतमीनान से सर हिलाकर बोला–"इन दोनों को भी उठा लाओ।" यह कहते वह पड़ाव की ओर चल पड़ा।

अजित और वीरभद्र के फँसे जाल को दो जंगली एक लाठी से लटकाकर पड़ाव के पास उठा लाये और वहाँ उतार दिया। वहाँ पर शिखिमुखी तथा विक्रमकेसरी के हाथ रस्सियों से बाँधकर दो जंगली उन रस्सियों को पकड़े खड़े हुए थे। लाल कुत्ता भी जाल में फँसाया गया था।

"उन दोनों को भी जाल से बाहर निकालकर उनके हाथों को रस्सियों से बांध दो। कुत्ते को जाल में ही रहने दो और एक लाठी से जाल को लटकाये ढो लाओ। खबरदार! उस कुत्ते ने अब तक हमारे दो अनुचरों के कंठ काट दिया है।" एक जंगली ने कहा। वह जंगली दल का नेता था।

"सरकार! इन खच्चरों को क्या किया जाय?" एक जंगली ने अपने नेता से पूछा।

"उन्हें हम अपने कुल के नेता को भेंट करेंगे। इस प्रदेश में ऐसे बढ़िया खच्चर नहीं मिलते!" जंगली दल के नेता ने जवाब दिया।

शिखिमुखी अब तक चुपचाप ये सारी बातें सुन रहा था। उसने अधिकार पूर्ण स्वर में गरजकर कहा–"हम यह नहीं जानते कि तुम लोग कौन हो? हम अपने महाराजा की खोज करते इस प्रदेश में आये हुए हैं। अचानक तुम लोगों ने चोरों की भांति हम पर हमला करके हमें बंदी बनाया। इसका बुरा फल तुम लोगों को भोगना पड़ेगा।"

"अरे भाई, ये धमकियां तो तुम हमारे कुल के नेता के सामने कर सकते हो! कालीमाता के सामने बलि देने के पहल तुम लोगों को बोलने का मौक़ा दिया जायगा।" ये शब्द कहते जंगली दल का नेता अट्टहास कर उठा।

"यह तो क़िस्मत की बात है कि हमें पहले ही मालूम हो गया कि तुम लोग किस काम से जा रहे हो! हमने यह भी सुना कि तुम लोग कैसे खतरनाक आदमी हो! जैसा तुमने कहा, हम इभ्युजाति के ही लोग हैं। अब तुम लोग चुपचाप हमारे पीछे चलो।" ये शब्द कहकर इभ्यु जाति के नेता ने अपने अनुचरों को सचेत किया।

सब लोग नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ पर पहले से ही डोंगियाँ तैयार थीं। सब नदी पार करके सूर्योदय तक गोलभरा गाँव में जा पहुँचे। गाँव की इम्भ्युजाति के लोग, स्त्री-पुरुष गलियों में इकट्ठे हो शिखिमुखी तथा उसके अनुचरों की ओर विचित्र ढंग से देखने लगे। गाँव के बीच एक विशाल गोल कुटी थी। वहाँ पहुँचते ही इम्भ्युजाति के नेता ने अपने अनुचरों को द्वार के पास रुकने का आदेश दिया और शिखिमुखी के दल को साथ ले भीतर पहुँचा।

कुटी के बीच एक ऊँचे आसन पर इम्भ्युकुल का नेता बैठा हुआ था। वह बूढ़ा था। चौड़ा मुख, बड़ी बड़ी आँखें, लंबी मूँछें—देखने में वह भयंकर था। उसके पीछे इम्भ्युजाति का मांत्रिक खड़ा था। नीचे एक तिपाई पर शिथिलालय का पुजारी बैठा था।

"पुजारी कुत्ता यहाँ पर है। आश्चर्य की बात है!" शिखिमुखी ने परिहासपूर्ण स्वर में कहा।

"तुम लोगों को शिथिलेश्वरी की बलि देनी है, इसलिए मैं यहाँ आया हूँ।" पुजारी ने दाँत पीसते हुए कहा।

"पहले कालीमाता को इन्हें बलि चढ़ाने दो। उसके बाद उस झूठे प्रसाद को चाहे तुम जो भी कर सकते हो! समझें!" ये शब्द कहते इम्भ्युजाति के मांत्रिक ने क्रोध भरी दृष्टि से पुजारी की ओर देखा। "शांत हो जाओ।" यह कहते इम्भ्युकुल के नेता ने हाथ हिलाया। तब शिखिमुखी तथा विक्रम की ओर तीक्ष्ण दृष्टि दौड़ाते पूछा–"मैं यह नहीं चाहता कि तुम चारों की बलि दूँ? बताओ, तुम लोगों का नेता कौन है? मैं उसी की बलि कालिमाता को चढ़ाऊँगा। बाकी लोग स्वतंत्र होकर जा सकते हो! कहो, तुम्हारा नेता कौन है?"

(और है)

जूतों की करामात

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन्, तुम्हारी हिम्मत का शतांश भी अगर रविपुर के युवराजा कुमारवर्मा में होती तो उसे अपने विवाह के मामले में एक चमार से होड़ लगानी न पड़ती। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुम्हें कुमारवर्मा की कहानी सुनाता हूँ।"

बेताल यों कहने लगा:

रविपुर के राजा भास्करवर्मा के कुमारवर्मा नामक इकलौता पुत्र था। वह देखने में बड़ा सुंदर और अक्लमंद था। उसने यों तो सभी युद्ध-विद्याएँ तो सीख ली थीं, पर वह कायर था। हँसी-मज़ाक के लिए ही सही उसे दूसरों के साथ खड्ग-युद्ध, गदा-युद्ध या मल्ल युद्ध करना पड़ता

वेताल कथाएँ

तो वह आपाद मस्तक कांप उठता। खेलों की प्रतियोगिता में भी उसे रक्तपात का भय बना रहता। इसलिए वह सदा इन सब कार्यों से दूर भागता था।

भास्करवर्मा का बंश बीरता और पराक्रम के लिए प्रसिद्ध था। इसलिए राजा को जब संदेह हुआ कि उसका पुत्र बड़ा कायर है तो वह बहुत दुखी हुआ। अनेक राजकुमारियों के स्वयंवरों के समय युद्ध-विद्याओं की प्रतियोगिताएँ हुआ करती थीं। भास्करवर्मा ने सोचा कि ऐसी प्रतियोगिताओं में अपने पुत्र को भेजा करे, तो उसका कायरपन जाता रहेगा। इसलिए भास्करवर्मा अपने पुत्र को हर एक स्वयंवर में ज़रूर भेजा करता था। लेकिन कुमारवर्मा एक भी प्रतियोगिता में भाग लिये बिना लौट आता था। ऐसी प्रतियोगिताओं को देखते कुमारस्वामी में कायरता बढ़ती ही गयी, पर किसी मात्रा में घटी नहीं।

उन्हीं दिनों में भद्रदेश के राजा ने अपनी पुत्री भद्रावती के विवाह के अवसर पर अनेक साहसपूर्ण प्रतियोगिताओं का प्रबंध किया। उन प्रतियोगिताओं में विजयी हुए व्यक्ति के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने का राजा ने सब देशों में ढिंढोरा पिटवाया।

भास्करवर्मा ने इस स्वयंवर में कुमारवर्मा को जबर्दस्ती भेजते हुए कहा-"इस बार तुम भद्र देश की राजकुमारी को जीते बिना बापस नहीं लौटना। प्रतियोरिताएँ भयंकर होंगी। फिर भी तुम भले ही उन प्रतियोगिताओं में मर जाओ, मैं यही सोचकर खुश रहूँगा कि मेरा पुत्र एक बीर की मृत्यु को प्राप्त हुआ है।"

पिता की बातों पर कुमारवर्मा का मन दुखी हुआ। उसे लगा कि उसका पिता यह कह रहा है-"जो भी तुम्हारा सामना

करे, उसे मार डालो या तुम्हीं मर जाओ।" वह मरने के लिए तैयार हो भद्रदेश के लिए चल पड़ा।

भद्रदेश में पहुँचने पर कुमारवर्मा को मालूम हुआ कि स्वयंवर में भाग लेने के लिए अनेक राजकुमार तथा कई अन्य वंशों के नामी योद्धा भी आये हुए हैं। उस नगर के लोग यह भी अंदाज़ा लगा रहे थे कि उन प्रतियोगिताओं में कौन कौन मरनेवाले हैं।

"ये सब राजकुमारी से विवाह करने आये क्यों? प्राणों की बलि क्यों दे। देखने से मालूम होता है कि ये प्रतियोगिताएं नहीं, बल्कि युद्ध ही हैं।" कुमारवर्मा ने अपने मन में सोचा।

उसी दिन शाम को कुमारवर्मा नदी के तट पर पहुँचा और उसने निर्णय कर लिया। उसके मन में राजकुमारी के साथ विवाह करने की वैसे कोई लालसा नहीं है। प्रतियोगिता में अगर भाग ले तो उससे भी कमज़ोर व्यक्ति भले ही उसके हाथों में मर जायें, पर किसी और के हाथों में उसका मरना निश्चत है। इसलिए वह खुद अपने प्राण ले ले, तो उसे ज्यादा आत्मिक शांति होगी।

यह सोचकर भँवरें मारनेवाली उस नदी में वह कूद पड़ा।

नदी की धारा से थोड़ी दूर पर एक चमार ने पानी में बहनेवाले कुमारवर्मा को देखा और तैरते हुए जाकर उसे किनारे खींच लाया।

"तुम देखने में संपन्न परिवार के मालूम होते हो। नदी में कैसे गिर गिर गये?" चमार ने पूछा।

"मैं किसी दुर्घटना के शिकार हो नदी में कूद नहीं पड़ा। जान-बूझकर ही नदी में गिर गया। ज़िंदगी से मैं ऊब गया हूँ। तुमने सोचा होगा कि मुझे बचाने से मैं

प्रसन्न होकर तुमको कोई इनाम दूँगा। लेकिन मैं तुमको कुछ नहीं दूँगा।" कुमारवर्मा ने उत्तर दिया।

चमार ने सहानुभूति पूर्ण बातें कहकर कुमारवर्मा की सारी कहानी जान ली और कहा–"बस, इस छोटी-सी बात के लिए तुम मरना चाहते हो? तुम निरे कायर हो। मेरे पास करामती जूते हैं। उन्हें पहन कर तुम स्वयंवर में जाओगे तो तुमको एक हज़ार हाथियों का बल और हज़ार सिंहों का धैर्य प्राप्त होगा। सब लोग तुम्हारे हाथों में हार जायेंगे। वास्तव में तुमको देखते ही सब वीरों की हिम्मत जाती रहेगी। सुनो, मैं तुम से बढ़िया इनाम ज़रूर लेना चाहता हूँ। मगर वह इनाम इस वक़्त न दो। कल शाम को राजकुमारी को जीतने के बाद दो।"

"तुम क्या चाहते हो?" कुमारवर्मा ने शंका भरे स्वर में पूछा।

"मैं जो चीज़ पूछूँगा, सो दे दो। मैं ऐसी कोई चीज़ न माँगूँगा जो तुम्हारी न हो।" चमार ने जवाब दिया। इसके बाद चमार ने अपने चमड़े के थैले से जूतों का एक जोड़ा निकाल कर कुमारवर्मा के हाथ दिया। दूसरे दिन प्रतियोगिता के स्थान पर मुलाक़ात करने की बात कहकर वह अपने रास्ते चला गया।

चमार के दिये हुए जूते पहनते ही कुमारवर्मा को एक बात याद आयी कि दैवयोग से ही वह जिंदा हो गया है। अगर वह नदी में गिर कर प्राण दे देता तो उसके पिता का अपमान होता। उसने आख़िर क्या चाहा? यही चाहा था कि मैं भद्रावती से विवाह करूँ या वीर की मृत्यु पाऊँ। मरना ही है तो प्रतियोगिता में प्राण देकर पिता को प्रसन्न करना ही उचित है। इसलिए प्रतियोगिता में भार

नहीं लेना चाहता था कि दूसरों के प्राण लेना उचित नहीं है। मरनेवाले उसके हाथ में न सही, दूसरों के हाथों में तो ज़रूर मर जायेंगे।

सोचते सोचते कुमारवर्मा को लगा कि प्रतियोगिता में भाग न लेना मूर्खता है।

दूसरे दिन कुमारवर्मा अपने दिल को पत्थर बनाकर प्रतियोगिता में भाग लेने गया। उसने प्राणों का मोह त्याग दिया था, इसलिए जान लड़ाकर युद्ध किया। एक-एक करके उसके हाथों में हारते गये। विजय के साथ उसकी हिम्मत भी बढ़ती गयी। असल में वे लोग भी अनेक प्रकार की युद्ध-विद्याएँ जानते न थे। लेकिन वे सब राजकुमारी को पत्नी के रूप में पाने के ख्याल से दुर्बल हो गये थे। कुमारवर्मा का मन त्याग से भरा था।

सूर्यास्त के होने के पहले उसने सबको जीत लिया।

जयमाला को ले भद्रावती उसके सामने आयी। उसकी सुंदर मूर्ति को देखते ही राजकुमारी की आँखें चमक उठीं।

राजकुमारी कुमारवर्मा के कंठ में माला पहनाने जा रही थी, ठीक उसी समय भीड़ को खदेड़ते हुए चमार कुमारवर्मा के निकट आया और बोला–"माला धारण करने के पहले मुझे अपना इनाम दे दीजिये।"

कुमारवर्मा ने कृतज्ञतापूर्ण कंठ से कहा–"ज़रूर दूँगा। बोलो, तुम क्या चाहते हो?"

"राजकुमारी से कहिये कि वे वह माला मेरे गले में पहना दे। आपने उनको जीत लिया। अब वे आपकी संपत्ति हैं।" चमार ने उत्तर दिया।

यह बात सुनते ही कुमारवर्मा का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। राजकुमारी का चेहरा फीका पड़ गया। पास में खड़े हुए लोग

चमार को मारने दौड़े। कुमारवर्मा को उसे बचाना पड़ा।

भद्रावती के पिता ने आगे बढ़कर पूछा— "बात क्या है?" कुमारवर्मा ने बिना संकोच के नदी में कूदने की घटना से लेकर सारी बातें सुनायीं।

सारी बातें सुनकर राजा ठठाकर हँस पड़ा और चमार से बोला—"अरे बदमाश! तुम एक पल भी यहाँ रहोगे तो तुम्हारी हड्डी-फसली तोड़कर चीलों को खिला दूंगा।"

"सरकार! मुझे अपने जूते दिलाइये।" यह कहकर चमार ने कुमारवर्मा के पैरों से जूते निकाले और भाग खड़ा हुआ।

इसके बाद भद्रावती और कुमारवर्मा का विवाह बड़े वैभव के साथ संपन्न हुआ। भास्करवर्मा अपने पुत्र की विजय पर बहुत प्रसन्न हुआ।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजन्, भद्रपुर के राजा ने चमार के प्रति ऐसा अन्याय क्यों किया? चमार के जूते पहनकर ही तो कुमारवर्मा ने विजय पायी? चमार इस अन्याय को सहन कर क्यों चला गया? इन सवालों का जवाब जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने कहा—"जूतों की कोई महिमा नहीं है। अगर उनमें महिमा होती तो चमार ने उन्हें धारण कर खुद प्रतियोगिता में भाग लिया होता। भद्रदेश के राजा ने भी कोई आपत्ति उठायी न होती। कुमारवर्मा की विजय का कारण प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पहुँचने के समय की उसकी मानसिक दशा ही है। उसी के द्वारा कुमारवर्मा की जीत हुई।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
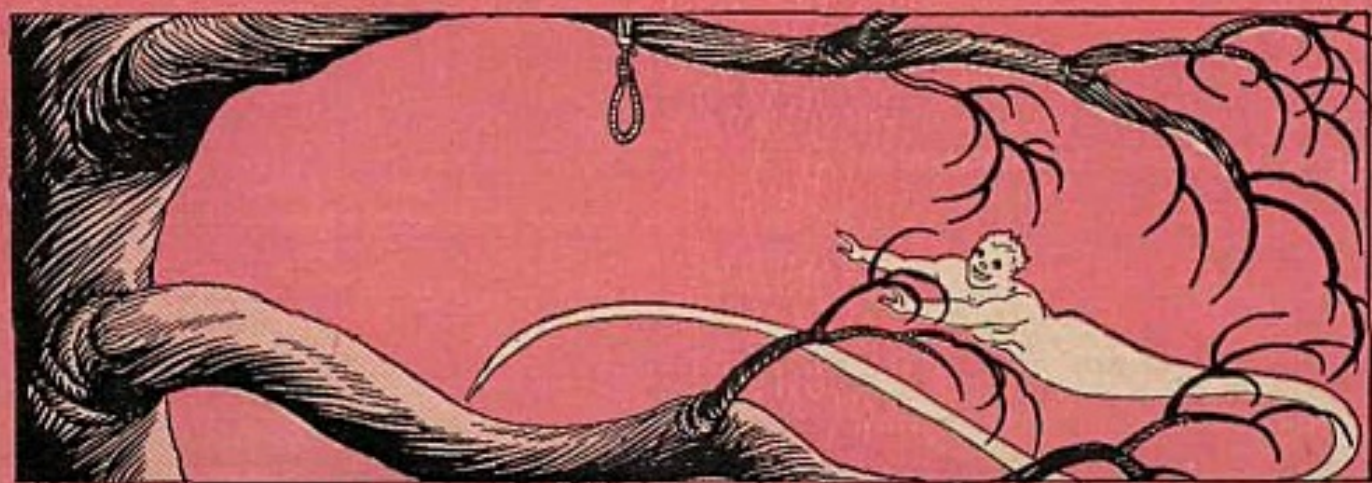
भाई-भाई

[२]

करिमित्र ने होश में आकर देखा तो उसके चारों ओर पानी दिखायी दिया। उसने कल्याणी को जगाया। कल्याणी डर के मारे रोने लगी।

"रोओ मत, अच्छा हुआ कि हम डूबे नहीं।" करिमित्र ने समझाया।

जल्द ही वह तख्ता किनारे से जा लगा। वे दोनों किनारे पर आये। दोनों एक झोंपड़ी में पहुँचे। उन्हें जोर की भूख लग रही थी।

झोंपड़ी के अन्दर गहरा अंधेरा था। झोंपड़ी के बीच एक तिपाई पर एक विचित्र बूढ़ी औरत बैठी थी।

"नानी, खाने को कुछ मिल सकता है?" करिमित्र ने उस बूढ़ी से पूछा।

"मैं इस तिपाई को छोड़ उठ नहीं सकती। उस कोने की एक थाली में खाना है। तुम ही ले लो।" बूढ़ी ने कांपते स्वर में उत्तर दिया। वे दोनों जब कोने की ओर बढ़ रहे थे, तब छत पर से एक बड़ी तलवार उनके पीछे गिर पड़ी।

"तुम दोनों क़िस्मतवर हो! वह तलवार तुम पर गिरती तो मर जाते!" बूढ़ी ने कहा।

"ऐसी तलवार को तुमने छत से क्यों लटकवा दी?" करिमित्र ने पूछा।

"मैंने उसे लटवायी नहीं। मैं इस तिपाई से छिपक गयी हूँ। मैं इस इंतज़ार में बैठी हुई हूँ कि कौन आकर मुझे छुटकारा दिला देगा।" बूढ़ी ने कहा।

करिमित्र और कल्याणी ने सारा खाना खा लिया। तब करिमित्र ने कहा–

"नानी जी! हम दोनों सारा खाना खा गये। तुमको ज़रा भी नहीं बचाया।"

सुरेन्द्र तिवारी

तिपाई से छुटकारा मिल सकता है! और यहाँ पर जो नगर अदृश्य रूप में है, वह दिखायी देगा! मेरा सर काटने की ताक़त तुम में हो तो तुम इस महानगर का राजा बन जाओगे।" बूढ़ी ने कहा।

"कल्याणी की मदद से मैं तुम्हारा सर काट सकता हूँ, नानी!" करिमित्र ने कहा।

करिमित्र के बहुत-कुछ समझाने पर कल्याणी बूढ़ी का सर काटने को तैयार हो गयी। आखिर दोनों ने अपनी सारी ताक़त लगाकर तलवार उठायी। करिमित्र ने तलवार बूढ़ी की गर्दन पर फेंकी, दूसरे ही क्षण बूढ़ी का सर नीचे आ गिरा।

"कोई बात नहीं। लेकिन मेरी यही चिंता है कि तुम दोनों मुझे छुटकारा नहीं दिला सकते। तुम दोनों बच्चे न होकर बड़े होते तो क्या ही अच्छा होता!" बूढ़ी ने समझाया।

"मैं बलवान हूँ, नानी!" करिमित्र ने हिम्मत के साथ उत्तर दिया।

"उस तलवार से मेरे सर काटने की ताक़त तुममें है?" बूढ़ी ने पूछा।

"ओह, यह कौन-सा बड़ा काम है?" करिमित्र ने हिम्मत बंधायी।

"बेटा, कम से कम मेरे वास्ते यह काम करो। कोई मेरा सर काट दे तभी मुझे इस

उस वक़्त चारों तरफ़ कोलाहल सुनायी पड़ा—"राजा की जय!" लोग जयकार कर रहे थे। दोनों ने आश्चर्य के साथ देखा। उनकी झोंपड़ी गायब हो गयी थी। चारों तरफ़ ऊँचे महल, लंबी गलियाँ, उन पर तेज़ी से दौड़नेवाले रथ और गाजे-बाजे भी सुनायी दे रहे थे।

लोग करिमित्र और कल्याणी को अपने कंधों पर उठाये राजमहल में गये। "आप दोनों ने हमको शाप से मुक्त किया। आप ही हमारे शासक हैं—राजा और रानी हैं।" लोगों ने कहा।

उन दोनों का वैभव के साथ पट्टाभिषेक हुआ। वे अभी बच्चे ही थे, फिर भी बड़ी सामर्थ्य के साथ राज्य का शासन किया।

पाँच साल और बीत गये। दोनों अब सत्रह साल के हो गये थे। अब दोनों ने विवाह करने का निश्चय किया। यह बात सुनकर प्रजा भी बड़ी खुश हुई। विवाह का मुहूर्त भी निश्चय किया गया।

विवाह के कुछ दिन पहले ही कल्याणी ने करिमित्र से कहा—"हमारे विवाह में मैं अपने माता-पिता और बहनों को निमंत्रण देना चाहिती हूँ। उन्हें खबर कर दो।"

"उनके साथ मेरे भाई भी आ जायेंगे। उन लोगों ने मुझे मार डालने के प्रयत्न किये। तुम यह बात अच्छी तरह जानती हो। तुम्हारे पिता ने हमें नदी में फेंकवाया। इसका कारण भी मेरे भाई ही हैं।" करिमित्र ने कहा।

लेकिन कल्याणी के अनुरोध करने पर करिमित्र ने उसकी इच्छा की पूर्ति की।

दूतों ने कल्याणी के पिता के पास जाकर संदेश सुनाया—"हमारे राजा ने अपने विवाह के शुभ अवसर पर आपको सपरिवार भाग लेने का निमंत्रण करते हमें आपके पास भेजा है।"

"मैं कई सालों से शासन कर रहा हूँ, लेकिन आपके राज्य का नाम कभी नहीं सुना है। आपकी राजधानी कौन है?" कल्याणी के पिता ने पूछा। उसे यह बात बिलकुल मालूम न थी कि उसी की लड़की की शादी होनेवाली है।

"आप हमारे नगर के बारे में सुने न होंगे। क्योंकि शाप के कारण हमारा नगर पाँच वर्ष पूर्व तक भूगर्भ में रह गया था। सौ साल तक किसीने उस नगर को न देखा होगा।" करिमित्र के दूतों ने उत्तर दिया।

"तब तो ऐसे नगर को अवश्य देखना चाहिये।" यह कहते कल्याणी के पिता ने अपने परिवार व दल को यात्रा के लिए तैयार किया।

दूतों के साथ आये हुए कल्याणी के पिता, उनकी तीन पुत्रियों, उनके बच्चों तथा उनके पतियों, जो उसके भाई हैं, सबका करिमित्र ने आगे बढ़ कर स्वागत किया। उनमें से किसी ने भी करिमित्र को नहीं पहचाना, गत पाँच सालों में वह इतना बड़ा हो गया था, उसके भाइयों से भी वह ऊँचा दिखायी दे रहा था। बूढ़ी के सर को जिस तलवार से उसने काटा था, उसे अब बड़ी आसानी से ही नहीं उठाता, बल्कि उसे हाथ में लिये घूम रहा था। वह सदा उसी की कमर में लटकती रहती थी।

कल्याणी में भी इतना परिवर्तन हो गया है कि उसे पहचानना भी मुश्किल था। वह अपनी बहनों से अधिक सुंदर दिखाई दे रही थी। उनकी बहनों का सौंदर्य थोड़ा मुरझा गया था। उनके बच्चे देखने में बड़े मनोहर लगते थे। कल्याणी को किसीने भी नहीं पहचाना। उसने अपनी माँ और बहनों से उद्रेक में आकर आलिंगन करना चाहा, लेकिन बड़ी मुश्किल से अपने को संभाल लिया।

विवाह के समय बड़ी दावत हुई, उस वक़्त करिमित्र अपने ससुर को बगल में बिठा कर बोला–"मैंने आपको सपरिवार आने का निमंत्रण भेजा था। आपका पूरा परिवार यहाँ उपस्थित है न?"

राजा ने एक बार सबकी ओर नज़र दौड़ाकर कहा–"हाँ, हम सब आ गये हैं।"

"मैंने सुना कि आपके चार पुत्रियाँ हैं, पर तीन ही दिखायी देती हैं।" करिमित्र ने पूछा।

"चार पुत्रियाँ ज़रूर थीं, पर मेरी आखिरी पुत्री पाँच साल पहले स्वर्ग सिधारी?" राजा ने पूछा।

"कैसे स्वर्ग सिधारी? मैं जान सकती हूँ?" कल्याणी ने पूछा।

"पानी में डूब कर।" राजा ने उत्तर दिया।

"शायद उसकी रक्षा के लिए भटों को नियुक्त नहीं किया?" कल्याणी ने पूछा।

"ऐसी कोई बात नहीं है। वह एक दुर्घटना है! उसके बारे में बातचीत करना मुझे पसंद नहीं है।" राजा ने कहा।

"कृपया बताइये तो, वह कैसी दुर्घटना है?" कल्याणी ने निवेदन किया।

राजा ने सारी कहानी सुनायी और वह चिंता में डूब गया।
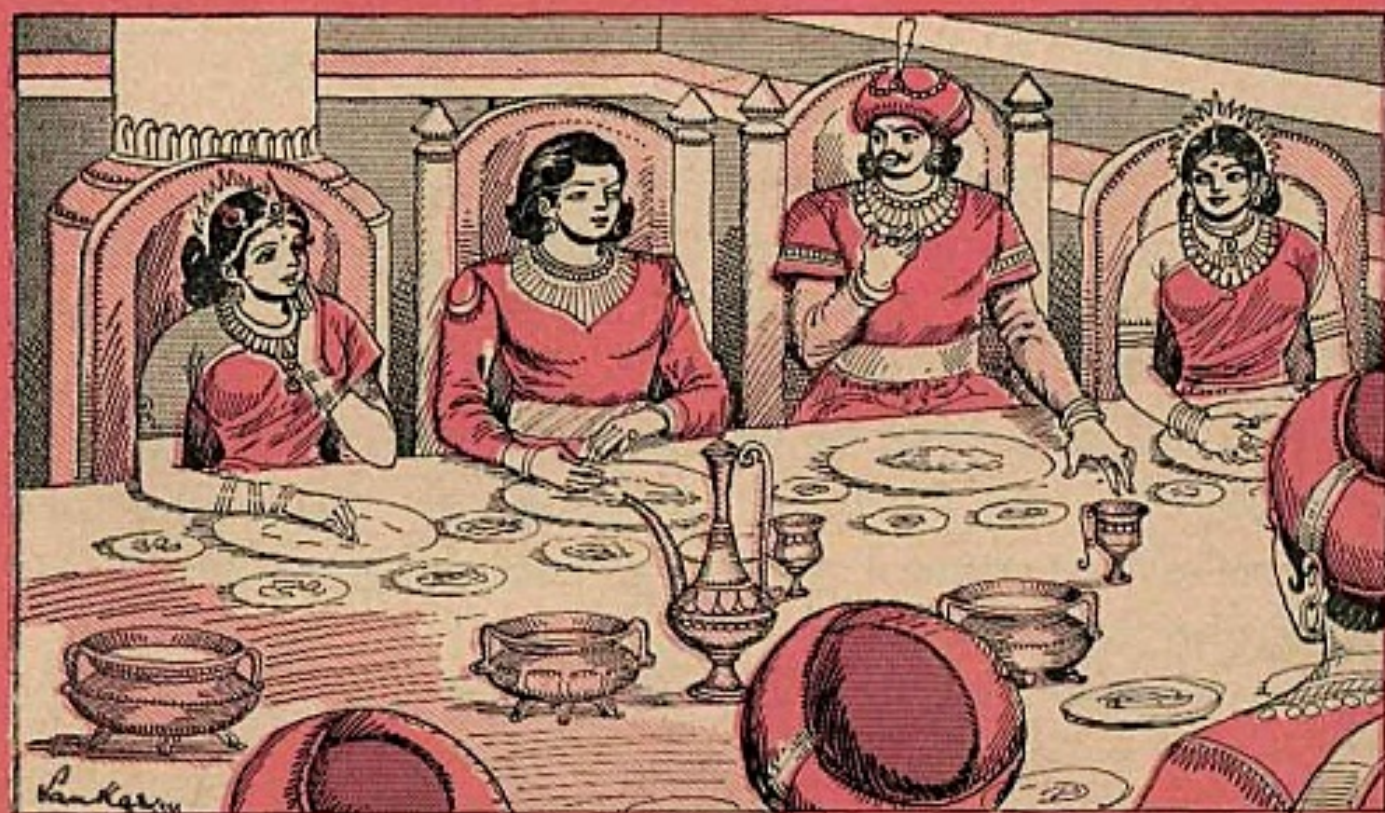
"उन बच्चों को पानी में डुबोकर मार डाला। क्या बाद को ही सही आपने पछताया?" करिमित्र ने पूछा।

राजा ने सर हिलाते हुए कहा—"उसके दूसरे ही दिन मैंने पश्चात्ताप किया। नदी में एक नाव भेजकर उन बच्चों को लाने का आदेश किया। लेकिन मेरे भटों को केवल उन बच्चों के सोने वाला तख़्ता मिला। शायद वे पानी में गिर कर डूब गये होंगे।"

कल्याणी अपने को संभाल न सकी। उद्रेक में आकर वह अपने को प्रकट करना चाहती थी, परंतु करिमित्र ने उसका हाथ पकड़ कर दबाते हुए राजा से कहा—"आपने जो अन्याय पूर्ण कार्य किया, उसके लिए पश्चात्ताप करना उचित ही है। क्योंकि उन बच्चों ने कोई अपराध नहीं किया था। किसी के नशीली दवा खिलाने से वे सो गये होंगे।"

राजा ने आश्चर्य में आकर पूछा—"ये बातें तुमको कैसे मालूम हैं?"

"क्योंकि आपने जिस भील बालक को नदी में डुबोने का आदेश दिया, वही मैं हूँ! इसलिए मैं यह कहानी जानता हूँ।" करिमित्र ने धीरे से कहा।

"मैं ही आपकी पुत्री हूँ। क्या आपने मुझे नहीं पहचाना?" ये शब्द कहते कल्याणी झट उठ खड़ी हुई।

उसी क्षण करिमित्र के भाई तलवार खींचकर उठ खड़े हुए।

"बिलकुल झूठ है! हमारा भाई भाई का मर गया है!" उन लोगों ने कहा।

"नहीं, मैं ज़िंदा हूँ। मुझे मारने के लिए सिंहों के बीच फेंक दिया। और न मालूम क्या क्या किया। लेकिन मैं मरा नहीं। यह बात छोड़ भी दे। मैंने कभी अपने मुँह से यह नहीं बताया कि मैं आपका भाई हूँ। आप लोगों ने यह बात

क्यों प्रकट की कि आप भील जाति के हैं। इस रहस्य को छिपाने के लिए ही तो आप लोगों ने मुझे मार डालने का प्रयत्न किया?" करिमित्र ने भाइयों से कहा।

ये बातें सुनते ही राजा की तीनों बड़ी पुत्रियाँ उठ खड़ी हुईं और बोलीं-"क्या तुम सब भील हो?"

"सफ़ेद झूठ है!" यह कहते करिमित्र के तीनों भाई तलवार उठाये उस पर कूद पड़े।

करिमित्र ने अपनी भारी तलवार फेंककर उन तीनों की तलवारों को बड़ी आसानी से काट डाला और कहा-

"तुम लोग अब सचाई को कैसे छिपा सकते हो? मैं इस वक़्त कोई बच्चा नहीं हूँ! तुम लोगों ने जो भूल की है, उसके लिए क्षमा माँगते अपनी अपनी पत्नियों के पैरों पर गिर जाओ! बेचारियों को तुम लोगों ने खूब धोखा दिया।" करिमित्र ने कहा। ये बातें सुन उसके भाइयों के सर झुक गये।

कल्याणी की बहनों ने आपस में परामर्श करके यह निर्णय किया-"इतने साल तक उनके साथ गृहस्थी चलाते हमने बच्चों का जन्म भी दिया। उन्हें क्षमा करना ही उचित होगा।" लेकिन वे इस बात के लिए उन्हें क्षमा न कर सकीं कि वे अपनी छोटी बहन की हत्या करने को भी तैयार हो गये हैं। अपने सगे भाई को भी मार डालने का निश्चय किया। ये अक्षम्य अपराध हैं।

"मैं और कल्याणी-हम दोनों उन्हें क्षमा कर रहे हैं। ऐसी हालत में आप तीनों क्यों क्षमा नहीं करतीं?" करिमित्र ने अपनी भाभियों से पूछा।

करिमित्र के तीनों भाइयों ने अपनी पत्नियों से क्षमा मांग ली। करिमित्र का विवाह बड़ी ही धूमधाम से संपन्न हुआ। सब लोग सुखपूर्वक स्नेह के साथ अपने शेष दिन बिताने लगे।

अद्भुत विजय

शिवदुर्ग के राजा ने समय काटने के विचार से अपने राज्य की पश्चिमी दिशा में महेन्द्र दुर्ग पर हमला कर दिया। ठीक इसी समय शिव दुर्ग की पूर्वी दिशा में स्थित विजय दुर्ग के राजा ने शिव दुर्ग पर आक्रमण किया।

विजय दुर्ग के राजा के आक्रमण का समाचर सुनते ही शिव दुर्ग में हलचल मच गयी। उस वक्त शिव दुर्ग की रक्षा करने के लिए फौज न थी। भूतपूर्व एक वृद्ध सेनापति और तीन-चार योद्धा मात्र दुर्ग में थे। भूतपूर्व सेनापति शक्तिसिंह बड़ा पराक्रमी था। शक्तिसिंह ने एक उपाय सोचकर दुर्ग के लोगों को आदेश दिया—"तुम लोग दुर्ग के द्वार खोल दो। मुखद्वार पर तोरण सजाओ। गाजे-बाजे का इंतज़ाम करो।" इसके बाद शक्तिसिंह ने अच्छी पोशाकें पहन लीं! शाल ओढ़कर द्वार के पास खड़ा हो गया। उसकी बगल में तीन-चार वृद्ध योद्धा भी खड़े हो गये।

दुश्मन की सेनाओं के निकट आते ही शक्तिसिंह चिल्ला उठा—"विजय दुर्ग के महाराजा की जय हो। महाराजा का स्वागत है।" उसके साथ बाक़ी लोग भी चिल्ला पड़े।

विजय दुर्ग के महाराजा ने अपने रथ को रोक लिया। उसके पीछे उसकी सेनाएँ भी रुक गयीं—"अबे, हम जानते हैं कि तुम बड़े ही धूर्त और चलाक हो। दुर्ग में हमारा स्वागत करके भीतर की सेनाओं की हमें बलि देना चाहते हो? तुम्हारी चाल हमारे सामने नहीं चलने की है।" यह कहकर राजा अपनी सेना के साथ लौट पड़ा।

होशियार लड़की

एक राजा था। शतरंज से उसका बड़ा प्रेम था। उसके दरबार में शतरंज के नामी खिलाड़ी थे। राजा भी शतरंज खेलने में निपुण था। हमेशा उन खिलाड़ियों के साथ वह शतरंज खेला करता था। एक दिन राजा के दरबार में शतरंज के खिलाड़ी आये। उन्होंने राजा से कहा– "महाराज, हम आज तक शतरंज में पराजित नहीं हुए। हम यह जानकर भी आपके दरबार में आये कि यहाँ शतरंज के कुशल खिलाड़ी हैं। हम उनको हराना चाहते हैं। कृपया हमें ऐसा मौक़ा दीजिये।"

राजा ने उन कुशल खिलाड़ियों के साथ अपने दरबारियों के शतरंज खेलने का उचित प्रबंध किया।

नये खिलाड़ियों ने दरबारियों के साथ शतरंज खेल कर सबको हरा दिया।

राजा ने समझ लिया कि उन नये खिलाड़ियों के बराबर खिलाड़ी उसके दरबार में नहीं हैं। नये खिलाड़ियों ने विजय की ख़ुशी में सभा की ओर नज़र दौड़ा कर पूछा– "इस दरबार मे अगर कोई शतरंज का कुशल खिलाड़ी हो, तो हमें हरा कर हमारी उपाधियाँ ले सकता है।"

तब प्रक्षकों के बीच में से नौ साल की एक लड़की आगे आयी और बोली– "महाराज, इन दोनों के साथ एक ही बार शतरंज खेलने की मुझे अनुमति दीजिये!"

"हमारे कुशल खिलाड़ियों को हराने वाले खिलाड़ियों के साथ यह छोटी लड़की शतरंज क्या खेलेगी? इस लड़की को खेलने दिया जाय तो मेरा अपमान होगा।" यह सोचकर राजा ने पहले संकोच किया। लेकिन नये खिलाड़ियों ने उस लड़की की उम्र का ख्याल किये बिना ही कहा–

सुधा श्रीवास्तव

"आओ बेटी, तुमसे बन सके तो हमें हरा दो।"

इस पर उस लड़की ने उन दोनों को दो अलग कमरों में बिठाया और उनके सामने शतरंज के मोहरें बिछाये। पहले एक खिलाड़ी के पास शतरंज के मोहरों की चाल चल कर, फिर दूसरे के पास जाती। इस तरह वह खेल खेलने लगी।

वे दोनों खिलाड़ी बात की बात में उस लड़की के साथ शतरंज खेलना चाहते थे, पर दो-तीन चालों में ही उन्हें मालूम हो गया कि वह लड़की बड़ी होशियार है। चेहरों से पसीना छूटने लगा। खेल पूरा होने के पहले ही दोनों ने स्वीकार किया– "हम इस लड़की को हरा नहीं सकते।" राजा के आश्चर्य की सीमा न रही। उस लड़की का पिता प्रेक्षकों में बैठा हुआ था। राजा ने उसे बुलाकर पूछा–"तुमने कभी नहीं बताया कि यह लड़की शतरंज में होशियार है।"

"महाराज, मेरी भी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। इसने दो दिन पहले ही शतरंज के मोहरों की चाल सीख ली है।" लड़की के पिता ने कहा।

इस पर राजा ने उस लड़की को बुला कर पूछा–"बेटी, तुमने दो दिन के अन्दर यह खेल कैसे सीखा?"

"महाराज, मैं बिलकुल शतरंज का खेल नहीं जानती। इन दोनों ने एक दूसरे को हराया है। मैंने एक को सफ़ेद मोहरे और दूसरे को काले मोहरे दिये। सफ़ेद मोहरेवाले की पहली चाल देखकर मैंने वह चाल काले मोहरोंवाले पर चली। मैंने सिर्फ़ एक की चाल दूसरे पर चली। बस, अपनी तरफ़ से कुछ नहीं किया।" लड़की ने उत्तर दिया।

लड़की की युक्ति पर सब खुश हुए। राजा ने नये खिलाड़ियों के साथ उस लड़की का भी सत्कार किया।

सिंदबाद की अद्भुत यात्राएँ

बगदाद में एक बड़ा व्यापारी था। उसके पास बहुत सारा धन व संपत्ति थी। वह बड़ा दानी था; गरीबों में खूब दान बाँटा करता था। उस व्यापारी के सिदबाद नामक एक लड़का था।

सिंदबाद जब जवान हुआ तब उसका पिता मर गया। पिता की सारी संपत्ति उसके हाथ लगी। उसने अपनी उम्र के कुछ साथियों को इकट्ठा किया और उनके साथ घूमते पानी की तरह धन बहाने लगा। विलासों के पीछे उसने अपना सारा धन बरबाद किया। राजा की तरह ज़िंदगी बितायी। देखते-देखते सिंदबाद की सारी जायदाद खतम हो गयी।

उस वक़्त सिंदबाद में ज्ञानोदय हुआ। उसने बचा-खुचा धन इकट्ठा किया। उस धन से नौका-व्यापार करने और सारी दुनिया देखने का निश्चय किया। उसने अपने धन से कई तरह के माल खरीदे और उस माल के साथ बगदाद से निकालने वाली एक व्यापारी नौका पर सवार हुआ। वह नाव नदी के किनारे बस्रा नगर जा रही थी। उसमें और कई व्यापारी भी थे।

बस्रा नगर से समुद्री यात्रा शुरू हुई। समुद्र पर कई टापुओं में नौका रुकी। व्यापारियों ने अपने माल बेचे और दूसरी वस्तुओं के साथ अपनी चीज़ें बदल भी डालीं। इसके बाद कुछ सप्ताहों तक केवल समुद्री यात्रा चलती रही।

आखिर उन्हें एक सुंदर हरा टापू दिखायी दिया। नौका को उस टापू में ले जाकर लंगर डाला गया। सभी व्यापारी रस्सियों की सीढ़ी से होकर उस टापू में उतरे। व्यापारियों के पास खाने के पदार्थ और बर्तन भी थे। कुछ
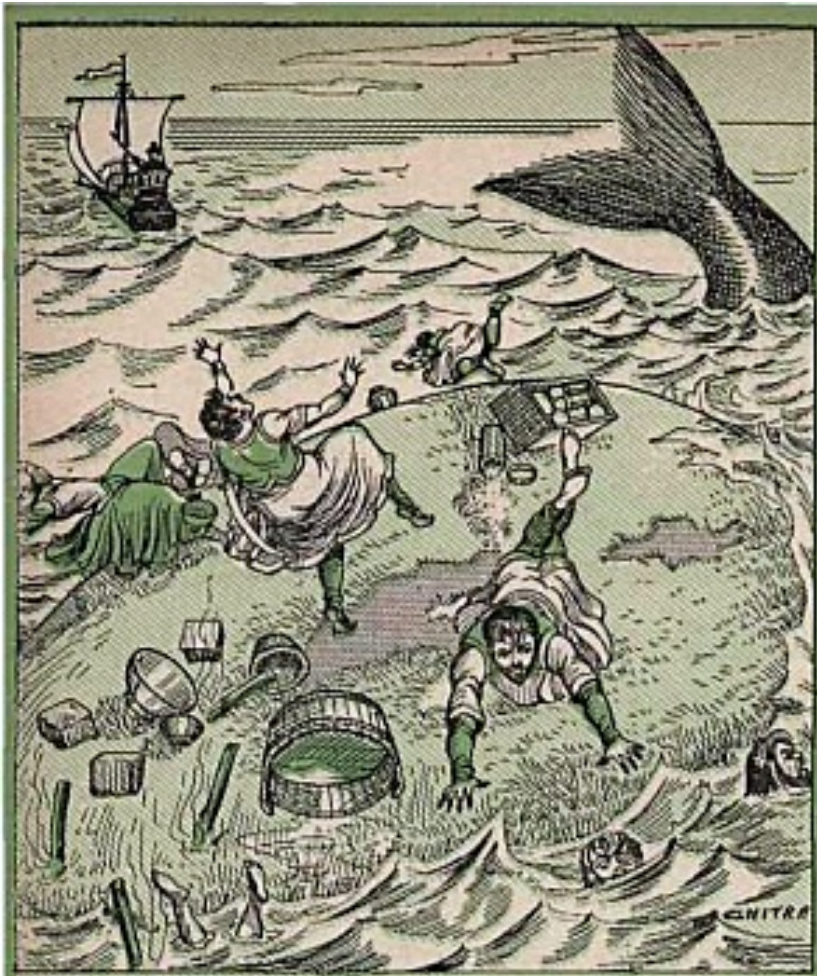
लोगों ने चूल्हे जलाकर रसोई का काम शुरू किया। कुछ लोग कपड़े धोने लगे। कुछ लोग टहलने लगे। कुछ लोग उस सुंदर टापू में बैठकर बातचीत करने लगे। सिंदबाद ने अपनी रसोई बनायी। कुछ देर सैर किया।

इतने में अचानक वह टापू कांप उठा। टापू में खड़े हुए सभी लोग नीचे गिर गये। वे भय और चिंता में डूब गये। इतने में नौका में से एक मल्लाह आवेश में आकर चिल्ला उठा—"हम लोग खतरे में फँस गये हैं। जल्द नाव में आ जाइये। यह टापू नहीं, तिमिंगल है। वह आग की आंच खाकर हिल रहा है। जल्द डूब जायगा। आप लोग मर जायेंगे। आ जाइये।"

ये बातें सुनते ही व्यापारी अपनी चीज़ों को जहाँ-तहाँ फेंक कर जान बचाने के लिए नौका की ओर दौड़ पड़े। जल्द ही नौका ने लंगर उठाया। कुछ व्यापारी नौका में आ गये। लेकिन कुछ लोग प्रयत्न करके भी नौका में न आ सके। उनमें सिंदबाद भी एक था। इस बीच तिमिंगल डूब ही गया। वे सब सिंदबाद के साथ समुद्र में डूब गये।

बाक़ी लोगों का पता न चला, पर सिंदबाद की क़िस्मत ज़बर्दस्त थी। उसके हाथ लकड़ी का एक बड़ा कठौता लगा। उसमें कुछ व्यापारियों ने कपड़े साफ़ किये थे। उस कठौते की मदद से सिंदबाद समुद्र पर उतरता ही रह गया। उसने कठौते पर औंधे मुंह लेटकर नाव की ओर बढ़ने की बड़ी कोशिश की। लेकिन जल्द ही नौका ने पाल उठाया और थोड़ी ही देर में आँखों से ओझल हो गयी। इतने में चारों तरफ़ अँधेरा भी फैल गया।

सिंदबाद ने कभी न सोचा था कि वह प्राणों से बच सकेगा। उस रात को

तथा दूसरे दिन भी लहरों के थपेड़े खाते हुये आखिर वह एक टापू के किनारे जा गिरा। समुद्री तट से होकर पहाड़ सीधे ऊपर उठे थे। उन पहाड़ों के ऊपरी भाग से कोई लताएँ नीचे लटकते समुद्र तक फैली हुई थीं। सिंदबाद ने अपनी बची-खुची सारी ताक़त बटोर ली और उन लताओं को पकड़कर ऊपर जा पहुँचा।

ऊपर पहुँचते ही उसे मालूम हुआ कि उसे कैसी यातनाएँ झेलनी पड़ी हैं। उसके सारे अंग शिथिल हो चुके थे। मछलियों ने उसके पैर बुरी तरह से कतर डाले थे। पीड़ा और कमजोरी की वजह से वह कुछ ही मिनटों में बेहोश हो गया।

रात भर सिंदबाद बेहोश ही रहा। दूसरे दिन सवेरे जब उसके चेहरे पर सूरज की रोशनी पड़ी, तब वह होश में आया। वह उठ खड़ा होना चाहता था। मगर पैर साथ न देते थे। वह लड़खड़ाया और नीचे गिर पड़ा। फिर ताक़त बटोर कर घुटनों पर रेंगते आखिर वह एक समतल प्रदेश पर पहुँचा।

तब उसे लगा कि उसकी जान में जान आ गयी। वहाँ पर अच्छे-अच्छे फलों के

उसे देखने के ख्याल से उसके निकट पहुँचा। तब अचानक एक आदमी कहीं से टपक पड़ा और उसने पूछा–"तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? यहाँ तक कैसे आ सके हो?"

"महाशय, हम लोग समुद्र पर यात्रा कर रहे थे। हम में से कुछ लोग बदक़िस्मती से समुद्र में डूब गये। भगवान की कृपा से मैं इस प्रदेश में प्राणों के साथ पहुँच पाया हूँ।" सिंदबाद ने जवाब दिया।

पेड़ थे। स्वच्छ जल के झरने बह रहे थे। वे फल खाकर, वहाँ का पानी पीते हुये उसने अपनी भूख-प्यास मिटायी। इस तरह उसने कई दिन वहाँ पर बिताये। धीरे-धीरे उसके घाव भरने लगे। दो बैशाखी तैयार करके उनकी मदद से वह पेड़ों के बीच चलने-फिरने लगा। अपनी क़िस्मत पर चकित होते बड़ी निराशा के साथ दिन बिताने लगा।

एक दिन सिंदबाद समुद्र के किनारे टहल रहा था। तब उसे वहाँ पर एक घोड़ा दिखायी पड़ा। वह देखने में मामूली घोड़ा नहीं लगता था। सिंदबाद

वह आदमी सिंदबाद का हाथ पकड़कर उसे भूगर्भ में ले गया। वहाँ पर एक विशाल चौपाल जैसा था। उस आदमी ने सिंदबाद को एक ऊँचे आसन पर बिठाया और उसे बढ़िया खाना खिलाया।

पेट भरने के बाद सिंदबाद इतमीनान से अपनी कहानी सुनाने लगा तो उस आदमी ने आश्चर्य के साथ उसकी कहानी सुनी। इसके बाद सिंदबाद के पूछने पर उसने भी अपनी कहानी सुनायी।

सिंदबाद जहाँ पहुँचा था, वह एक टापू था। उसे जिसने खाना खिलाया, वह एक घुड़-साज था। ऐसे आदमी उस

टापू में जहाँ-तहाँ भरे पड़े थे। वे सब महाराजा मीर्जान के नौकर थे। हर अमावास्या के दिन समुद्र में से विचित्र घोड़े टापू में आ जाते हैं। उनको पकड़ने का काम ही इन घुड़साज़ों का था।

"अच्छा हुआ कि मुझसे तुम्हारी मुलाक़ात हुई। वरना तुम इस टापू में घुट-घुट कर मर जाते। तुमको मैं अपने राजा के पास ले जाऊँगा।" घुड़साज़ ने सिंदबाद से कहा।

वे इस प्रकार बातें कर ही रहे थे कि बाक़ी घुड़साज़ भी वहाँ पर आ पहुँचें। इसके बाद सब लोग सिंदबाद को अपने साथ लेकर महाराजा मीर्जान के महल की ओर चल पड़े। वे लोग सिंदबाद को एक घोड़े पर बिठाकर ले गये।

घुड़साज़ों ने महाराजा मीर्जान से मिलकर उसे सिंदबाद का वृत्तांत सुनाया, तब उसे राजा के दर्शन हुये। मीर्जान ने सिंदबाद का आदरपूर्वक स्वागत किया। सिंदबाद के मुँह से ही उसका सारा वृत्तांत राजा ने सुना।

"सिंदबाद! तुम्हारी आयु बड़ी ज़बर्दस्त मालूम होती है। वरना तुम इतने ख़तरों से बचकर जीवित नहीं रह सकते थे।" यह कहकर राजा ने
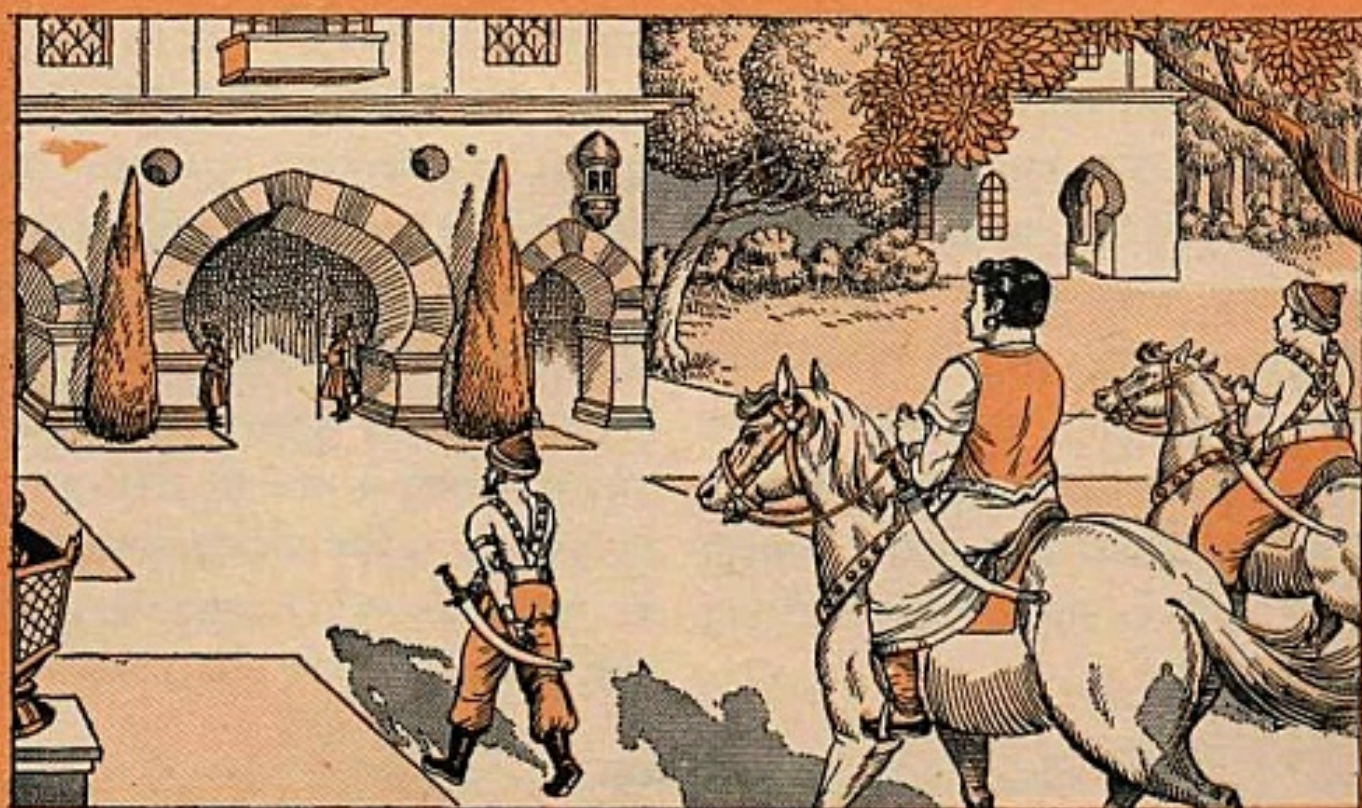
सिंदबाद को अपने निकट हितैषियों में स्थान दिया और उसे दरबार में नौकरी भी दी। बंदरगाहों का निरीक्षण करना और नौका-व्यापार संबंधी मामले देखने का काम उसे सौंपा गया।

सिंदबाद के लिए यह बड़ा हल्का काम था। उसे काफ़ी फ़ुरसत मिलती थी। इसलिए वह रोज़ राजा से मिलकर बात किया करता था। धीरे धीरे राजा पर उसका प्रभाव बढ़ता गया। सिंदबाद राजा का निकट मित्र बना। उसकी सलाह के विना राजा मीर्जान कोई काम करता न था।

सिंदबाद को वैसे कोई कमी न थी, पर उसके मन में यह दुख ज़रूर था कि वह अपने देश से दूर है। वह हमेशा अपनी मातृभूमि के बारे में ही सोचा करता था। उसके दिल में यह इच्छा बनी रही कि वह किसी न किसी तरह एक दिन ज़रूर अपने देश को जायगा। बंदरगाह में जब दूसरे देशों की नौकाएँ आतीं, तो उनके मल्लाहों से वह पूछा करता—"बगदाद नगर किस दिशा में है?" लेकिन उनमें से कोई भी उसे सही जवाब नहीं दे पाता था। क्योंकि उन लोगों ने बगदाद नगर का नाम तक न सुना था। धीरे-धीरे अपने देश को लौटने की इच्छा बढ़ती गयी और साथ ही न जा सकने की शंका भी।

एक दिन सिंदबाद बंदरगाह में खड़े हो नौकाओं का इंतज़ार कर रहा था। एक बड़ी नौका ने उस बंदरगाह में पहुँचकर लंगर डाला। नाविकों ने रस्सियों की सीढ़ी नीचे डाल दी, जिस पर से होकर सिंदबाद नौका में पहुँचा। नाविक की मदद से सिंदबाद ने माल की जाँच करना शुरू किया। नाविक एक-एक करके माल का ब्यौरा देने लगे, सिंदबाद ने उनकी सूची बनायी।

सूची के पूरा होने पर सिंदबाद ने नाविकों से पूछा–"क्या तुमने सारे माल का ब्यौरा दिया? और तो नहीं बचा?"

"थोड़ा माल और बचा है, साहब! लेकिन वह बेचने का माल नहीं है। इसलिए मैंने उसे नौका के निचले तल्ले में रख छोड़ा है। उस माल का मालिक समुद्र में डूब गया है। मौक़ा पाकर मैं उस माल को उसके रिश्तेदारों को सौंपना चाहता हूँ। वह बगदाद का निवासी था।" नाविक ने कहा।

सिंदबाद का कलेजा तेज़ी से धड़कने लगा। "क्या तुम उस डूबनेवाले आदमी का नाम बता सकते हो?" सिंदबाद ने नाविक से पूछा।

"सिंदबाद है।" नाविक ने उत्तर दिया।

सिंदबाद ने मल्लाह की ओर ध्यान से देखा और उसे पहचान लिया। वह मल्लाह सिंदबाद के साथ कुछ और लोगों को समुद्र में छोड़कर चला गया था।

"मैं ही सिंदबाद हूँ।" सिंदबाद चिल्ला पड़ा।

इसके बाद सिंदबाद ने नाविक को अपनी सारी तक़लीफ़ें सुनायीं। लेकिन नाविक ने उसकी बातों पर यक़ीन नहीं किया। उसने गरजते स्वर में पूछा–"तुम कैसे दगेबाज़ हो? मुझे बेवकूफ़ बनाना चाहते हो? हमारी आँखों के सामने सिंदबाद समुद्र में डूब गया है। तुम्हें अपने को सिंदबाद कहने में शर्म नहीं आती?"

"मैं सचमुच सिंदबाद हूँ! मुझे झूठ बोलने की क्या ज़रूरत है?" यह कहते उसने विस्तारपूर्वक तिमिंगल का सारा वृत्तांत सुनाया। उसकी बातों पर नाविक को विश्वास करना पड़ा। उसने नौका में आये हुए अन्य व्यापारियों को बुलाकर उन्हें सिंदबाद का परिचय कराया। सिंदबाद ने उन सब को अपनी अनोखी

कहानी सुनायी। वे सब आश्चर्यचकित हुए। सिंदबाद मौत के मुँह से बच निकला था। इस पर सब ने उसका अभिनंदन भी किया।

सिंदबाद का सारा माल सुरक्षित ही था। उसने बोरों पर जो मुहरें लगायी थीं, वे ज्यों की त्यों थीं। नाविक ने वह सारा माल सिंदबाद के सुपुर्द कर दिया। उस माल में से अमूल्य वस्तुओं को सिंदबाद ने मीर्जान महाराजा को भेंट देने के लिए रख छोड़ा और बाक़ी माल को हाट में ले जाकर अपनी लागत से सौ गुने फ़ायदे पर बेच डाला।

सिंदबाद का समाचार जानकर महाराजा मीर्जान बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सिंदबाद से जो उपहार लिये उनके कई गुने क़ीमती उपहार सिंदबाद को भी दिये। उन्हें भी बेचकर सिंदबाद ने नक़द बनाया। यात्रा की तैयारियाँ करने के बाद राजा मीर्जान के दर्शन कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। सिंदबाद के रवाना होते समय राजा मीर्जान ने उसे अपने देश के क़ीमती इत्र, चन्दन, कपूर, धूप आदि भी भेंट में दिये। उन सब वस्तुओं को लेकर सिंदबाद अपने नगर के लिए रवाना हुआ। इसके बाद कई दिन तक समुद्र में यात्रा करके बिना किसी प्रकार की तक़लीफ़ों के बस्रा नगर से होते हुए सिंदबाद बगदाद पहुँच गया।

ईश्वर की कृपा से सिंदबाद के सभी रिश्तेदार कुशल थे। वह जो धन कमा लाया था, उससे सिंदबाद ने अनेक महल, बगीचे, ज़मीन-जायदाद, गुलाम, नौकर और चाकरों को ख़रीदा। अपनी जायदाद इतनी बढ़ायी, जो उसके पिता ने मरते वक़्त जो जायदाद सौंपी थी, उससे कई गुने ज्यादा थी। इसके बाद समस्त प्रकार के सुखों का अनुभव करते अपनी पहली यात्रा की कठिनाइयों को भूल गया। (और है)

मूक राजकुमारी

एक सुंदर राजकुमारी का चित्र देखकर एक राजकुमार उस पर मोहित हो गया। उसने क़सम खायी कि वह उसी राजकुमारी के साथ शादी करेगा। उसके मित्रों ने उसे समझाया कि वह ऐसा प्रयत्न न करे। क्योंकि उस चित्रवाली राजकुमारी के साथ शादी करने के ख्याल से कई राजकुमार निकल पड़े, मगर उनमें से एक भी वापस न लौटा।

राजकुमार ने उस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया। उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह राजकुमारी के साथ शादी करके ही रहेगा और वह एक दिन उस राजकुमारी के देश के लिए चल पड़ा।

राजकुमार ने जब राजकुमारी के देश में क़दम रखा, तब उसे एक भीड़ दिखायी दी। उस भीड़ के बीच में एक आदमी अपने हाथ में पिंजड़ा लिये हुए था। उसमें एक चिड़िया थी, जिसका वह नीलाम बोल रहा था। राजकुमार ने सब से अधिक नीलाम बोलकर उस चिड़िये को ख़रीदा। उसने पिंजड़े को खोलकर देखा तो उसमें एक मामूली गौरैया था।

"मैंने कैसे धोखा पाया?" राजकुमार ने गौरैया की ओर देखते हुए कहा।

"तुमने धोखा नहीं खाया। मुझसे तुम्हारा लाभ ही होगा।" गौरैया ने कहा।

"ओह, तुम बात करना भी जानते हो?" राजकुमार ने पूछा।

"पिंजड़े को फेंककर तुम मुझे अपनी जेब में रख लो।" गौरैया ने फिर कहा।

राजकुमार ने गौरैया को जेब में रख लिया। राजमहल में जाकर राजा से कहा—"महाराज, मैं आपकी पुत्री के साथ विवाह करने के लिए आया हूँ।"

इस पर राजा ने कहा—"मेरी पुत्री सात साल से किसी से बात नहीं करती।

ग्रीक की लोक-कथा

इसका कारण वैद्य भी जाँच करके बता नहीं पा रहे हैं। इसलिए मैंने यह निश्चय कर लिया है जो राजकुमारी से बोलवायगा, उसके साथ उसकी शादी करूँगा। यदि तुममें यह हिम्मत हो कि तुम राजकुमारी से बोलवा सकोगे तो मैं तुमको राजकुमारी के पास भेज दूँगा। शाम के अन्दर तुम राजकुमारी से बोलवा नहीं सकोगे तो तुम्हारा सर कटवा दिया जायगा। इसलिए खूब सोच-समझकर निश्चय कर लो।"

राजकुमार की समझ में आया कि कई राजकुमार राजकुमारी से शादी करने के लिए आकर क्यों लौट नहीं आये? उसे हिम्मत बंधाते हुए जेब में बैठा गौरैया बोला—"तुम घबराओ नहीं, मैं जो हूँ।"

"मुझे पूरा विश्वास है कि मैं राजकुमारी से बोलवा सकता हूँ। इसलिए मुझे राजकुमारी के कमरे में भिजवा दीजिये।" राजकुमार ने राजा से कहा।

अंत:पुर में राजकुमारी की सेवा के लिए एक बूढ़ी परिचारिका नियुक्त थी। राजा उस राजकुमार को राजकुमारी के कमरे में ले गया और बोला—"सूर्यास्त के अन्दर तुम राजकुमारी से बोलवा न सकोगे
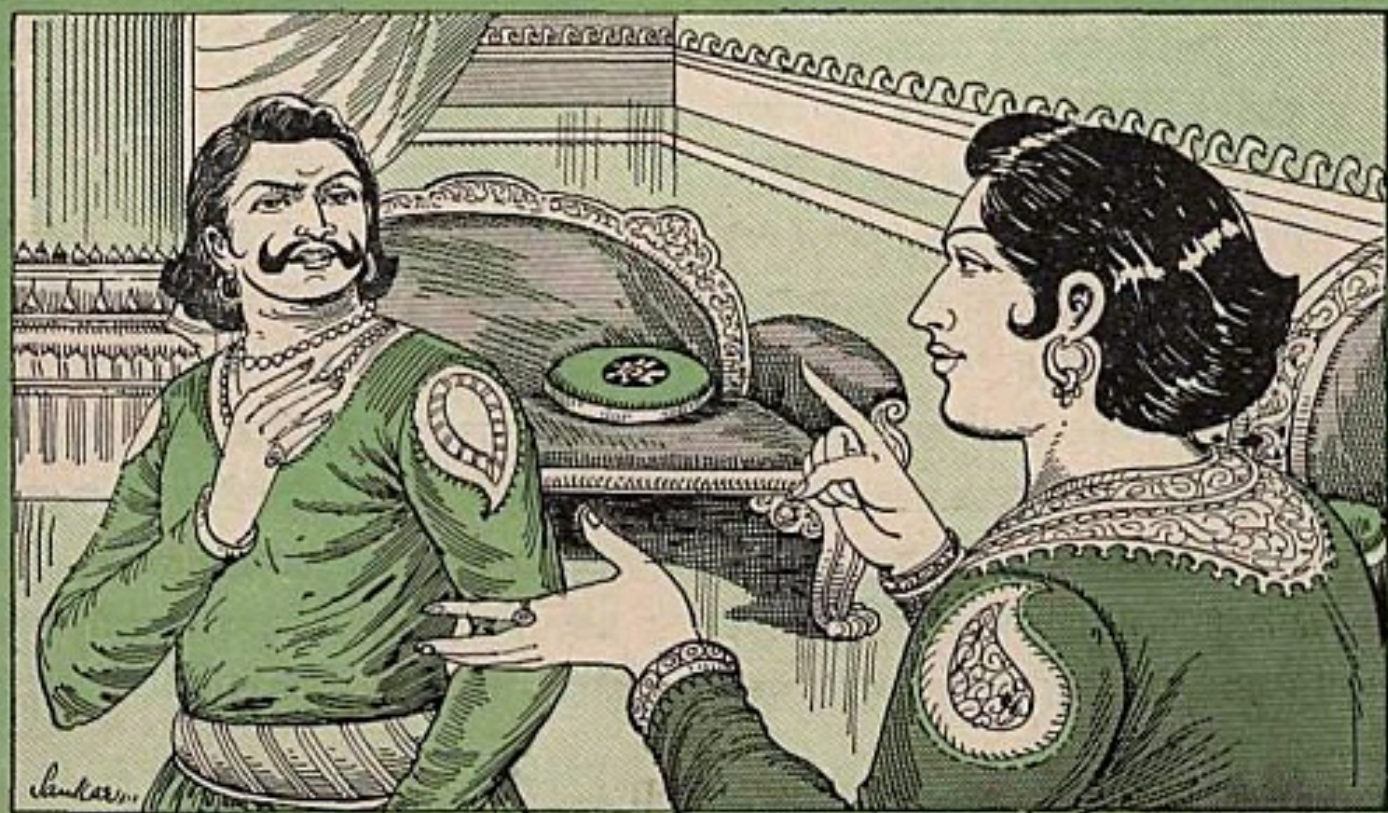
तो तुम्हें सारी रात जेलखाने में बिताना होगा और कल सुबह तुम्हारा सर उड़ा दिया जायगा!" यह कहकर राजा चला गया।

राजकुमारी खिड़की में से बाहर देख रही थी। राजकुमार ने उससे पूछा—"राजकुमारी, कुशल तो हो न?"

राजकुमारी ने कोई जवाब न दिया और न उसकी ओर ही देखा।

"मुझे किसी आले में रख दो। तुम उस आले से बात किया करो। उस आले से पूछो कि वह तुम्हें कोई कहानी सुनावे। बाकी काम मैं देख लूंगा। अगर मैं कोई सवाल पूछूं तो तुम उसका अंट-संट जवाब दो।" ये बातें गौरैया ने राजकुमार से चुप चाप में बतायीं।

"क्यों राजकुमारी? मैंने तुम्ही से पूछा कि कुशल तो हो?" ये बातें कहते राजकुमार राजकुमारी की बगल में से होते हुए आगे बढ़ा और गौरैये को एक आले में छिपा दिया। राजकुमारी बाहर देखती रह गयी।

"राजकुमारी, तुम मुझे जवाब न दोगी, तो मैं आले से ही बात करूँगा। शायद वही मुझे जवाब दे!" राजकुमार ने कहा। "कोई पागल मालूम होता है! कहीं

आला भी बात करता है?" राजकुमारी ने मन में सोचा।

"क्यों आले? राजकुमारी मुझ से बात नहीं करती; क्या तुम्हीं सही, मेरे सवाल का जवाब दोगे?" राजकुमार ने पूछा।

"ज़रूर दूंगा। राजकुमारी तो बावरी है। उससे क्यों बात करते हो? तुम बात करना ही चाहते हो तो मुझ से करो।" आले में छिपे गौरैये ने उत्तर दिया।

राजकुमारी चौंक उठी। उसे क्रोध भी आया। उसने ज़ोर से चिल्लाना चाहा—"मैं बावरी नहीं हूँ।" लेकिन उसने बड़ी मुश्किल से अपने ऊपर नियंत्रण किया।

राजकुमार के साथ आले का बात करना राजकुमारी की समझ में न आया। वह दोनों की बातचीच बड़े ध्यान से सुन रही थी।

थोड़ी देर बाद राजकुमार बोला– "आले, समय नहीं कटता। कोई अच्छी कहानी सुनाओ तो।"

गौरैया यों बोला–"एक गाँव में तीन भाई थे। बड़ा बढ़ईगिरी में प्रवीण था। दूसरा कपड़े बुनने में कुशल था। तीसरा भाई कोई काम नहीं जानता था, मगर भगवान पर बड़ा विश्वास रखता था। वे तीनों शहर में जाकर पेट पालने का इरादा करके गाँव से चल पड़े। वे जब एक पहाड़ के पास पहुँचे तब शाम हो गयी। वह रात उन्हें एक गुफा में बितानी पड़ी। खूँख्वार जानवरों से बचने के लिए उन लोगों ने गुफा के बाहर एक अलाव जलाया। बारी बारी से एक एक पहर एक भाई पहरा देने लगा। पहरा देने की पहली बारी बड़े भाई की थी। उसने एक लकड़ी लाकर एक औरत का खिलौना तैयार किया। इसके बाद दूसरे भाई के पहरा देने की बारी आयी। उसने उस खिलौने के लिए कपड़े तैयार करके उसे पहना दिया और तीसरे को जगाकर उस खिलौने को देखा। उस पर मोहित हो उसने

ईश्वर से प्रार्थना की कि उस में प्राण फूंके। थोड़ी देर में खिलौने में जान आयी और वह हिलने लगा। राजकुमार, अब तुम बताओ कि प्राणवाले उस खिलौने के साथ किस को शादी करनी है?"

गौरैये का सवाल सुनकर राजकुमार ने कहा–"लकड़ी से खिलौना बनानेवाले को उसके साथ शादी करनी है।"

"राजकुमार, तुम भूल करते हो। उसे कपड़े पहनानेवाले के साथ अन्याय न होगा?" गौरैये ने पूछा।

"तुम दोनों की खोपड़ी बड़ी अजीब है। प्राण फूंकनेवाले तीसरे को ही उसके साथ शादी करनी है!" राजकुमारी ज़ोर से चिल्ला उठी।

दूसरे ही क्षण राजकुमारी ने अपने मुंह को हाथ से दबा लिया। लेकिन फ़ायदा ही क्या था। उसके मुंह से बात निकल गयी थी।

"हमारी राजकुमारी बोल उठी है।" बूढ़ी दासी दौड़ते हुए भीतर आयी।

उसी वक़्त राजा ने भी कमरे में प्रवेश करते हुए राजकुमार से पूछा–"सूर्यास्त हो गया है। क्या तुमने मेरी पुत्री से बोलवाया?"

"जी, महाराज! मैंने राजकुमारी से बोलवाया है।" राजकुमार ने कहा।

"यह सब झूठ है! मैंने उनसे बात नहीं की।" राजकुमारी ने कहा।

राजा ठठाकर हँस पड़ा। उसने राजकुमारी के मुंह से सात साल पहले बोली सुनी थी। इसके अलावा दासी ने राजा से बताया कि राजकुमारी से बात करते उसने खुद अपने कानों से सुना है।

राजा ने अपनी पुत्री का विवाह राजकुमार के साथ किया। सब सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगे।

दो मूर्ख

एक गाँव में एक मूर्ख गरीब था। भाग्यवश उसे एक दिन दस रुपये मिले। उसकी समझ में नहीं आया कि सब की आँख बचाकर उन रुपयों को कैसे छिपाये। आख़िर उसने अपने घर की मिट्टी की दीवार में छेद बनाया। उसमें रुपये रखकर गीली मिट्टी से उसे फिर भर दिया। उस गीली मिट्टी के सूखने तक उस मूर्ख ने किसी को भी अपने घर में पैर रखने न दिया। जब गीली मिट्टी सूख गयी तब उसका डर जाता रहा। उसने उस दीवार पर यों लिखा–"इस दीवार में रुपये छिपाये नहीं हैं।" उसने यह लिखकर अपनी अक्लमंदी पर संतोष की साँस ली।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन उसका मित्र आया। तब घर का मालिक भीतर न था। लेकिन दीवार पर उसे वह लिखावट दिखायी दी। उसने सोचा कि यह क्यों लिखा है कि दीवार में रुपये छिपाये नहीं हैं? उसके मित्र ने ऐसा क्यों लिखा, यह जानने के लिए उसने दीवार खोदकर देखा। उसे रुपये मिले।

रुपये पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। मगर उसे यह डर भी लगा कि उसकी चोरी का पता लगने पर उसे मार खानी पड़ेगी। यह सोचकर उसने दर्वाज़े पर लिखा–"अमुक आदमी के रुपयों की चोरी मैंने नहीं की।" तब जाकर उसे संतोष हुआ।
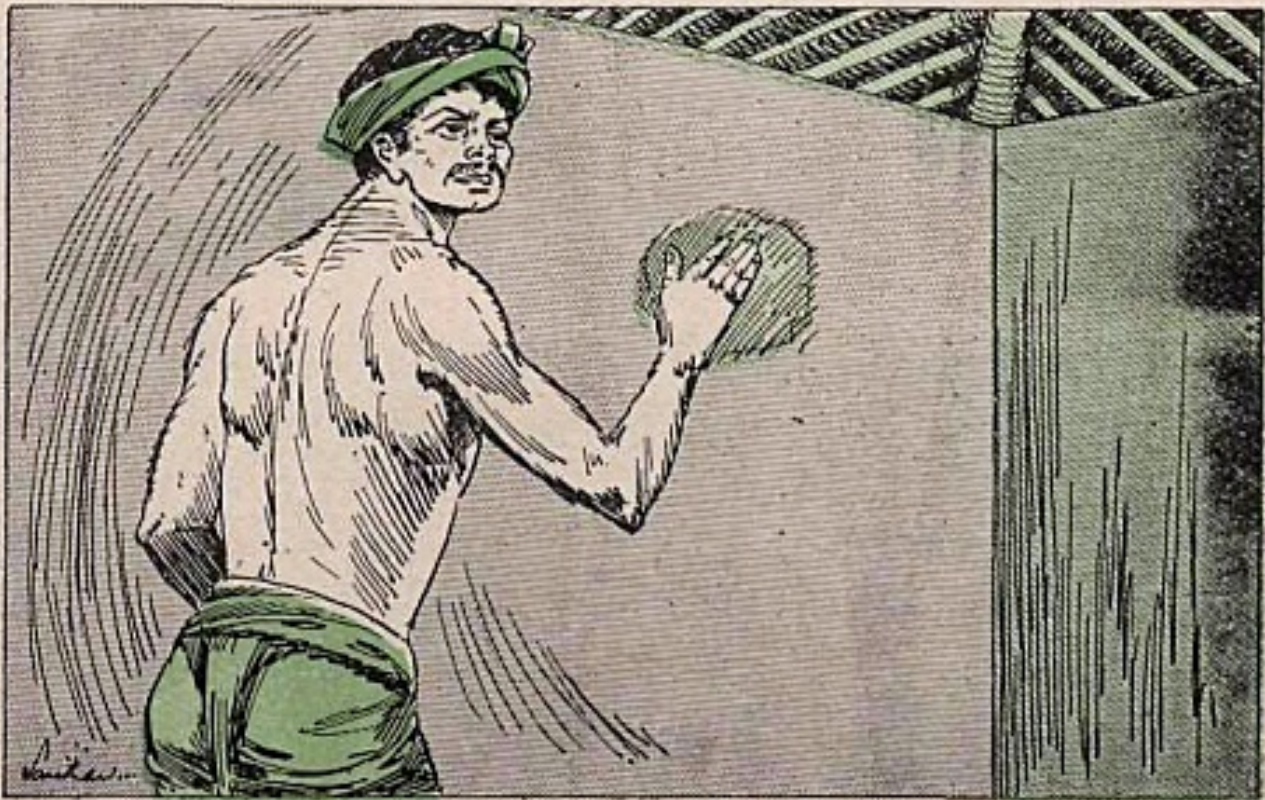
फ़रियाद

एक गाँव में लक्ष्मीचन्द नामक एक जमीन्दार था। उसके इकलौते बेटे का नाम श्रीधर था। जब वह विवाह के योग्य हुआ तब एक बढ़िया संबंध चुनकर लक्ष्मीचन्द ने अपने पुत्र की शादी पक्की की।

लक्ष्मीचन्द ने सोचा कि अपनी और समधी की हैसियत के मुताबिक़ वर और वधू का जुलूस हाथी के हौदे पर निकालना ज़रूरी है। मगर लक्ष्मीचन्द के यहाँ हाथी न था, उसके मित्र धनसिंह के यहाँ एक बड़ा हाथी था। लक्ष्मीचन्द ने धनसिंह के यहाँ जाकर कहा—"धनसिंह, मैंने अपने लड़के का विवाह पक्का कर लिया है। विवाह ठाठ से मनाना चाहता हूँ। जुलूस निकालने के लिए अगर तुम अपने हाथी को उधार में दोगे, तो विवाह के होते ही मैं उसे वापस कर दूंगा।"

धनसिंह ने हाथी को उधार देने में कोई एतराज नहीं किया। लेकिन बार-बार उसे यही समझाया कि वह हाथी उसके दादे के जमाने का है। इसलिए बड़ी सुरक्षा के साथ उसे लौटाना होगा।

शादी वैभव के साथ संपन्न हुई। शादी के बाद लक्ष्मीचन्द जब अपने गाँव लौट रहा था, तब बदक़िमती से हाथी मर गया।

"धनसिंह, मैं तुम्हें अपना चेहरा तक दिखाने लायक़ न रहा। क्या बताऊँ कि लौटते समय दुर्भाग्य से तुम्हारा हाथी मर गया। लेकिन मैं उसका मूल्य देने को तैयार हूँ। यह बताओ कि तुम हाथी की क़ीमत चाहते हो, या कोई दूसरा हाथी?" लक्ष्मीचन्द ने धनसिंह से पूछा।

"मुझे तो अपना वही हाथी चाहिये। तुम चाहे लाख हाथी दो, वे सब मेरे हाथी के बराबर थोड़े ही होंगे? मुझे अपना वही

गुलशन राय

हाथी ला दो।" धर्नसिह ने हठ किया। "मरे हुए हाथी को कैसे जिला कर दे सकता हूँ?" लक्ष्मीचन्द ने पूछा।

धर्नसिह ने मर्यादाराम के पास जाकर लक्ष्मीचन्द के प्रति फ़रियाद की। मर्यादाराम ने दोनों के बयान सुने। उसे एक बात स्पष्ट हो गयी कि हाथी बूढ़ा हो गया है। उसकी मौत निकट आयी थी, इसलिए वह मर गया। उसकी मौत का कारण लक्ष्मीचन्द की असावधानी नहीं है। धर्नसिह का हठ सचमुच उसी हाथी को फिर से पाने के लिए नहीं बल्कि लक्ष्मीचन्द को सज़ा दिलाने के लिए ही। यह सोचकर मर्यादाराम ने कहा—"तुम दोनों का फ़ैसला कल करूँगा। कल सुबह दोनों आ जाओ।"

मर्यादाराम ने दोनों को भेज दिया। इसके बाद लक्ष्मीचन्द के नाम गुप्त रूप से एक पत्र भेजा। दूसरे दिन अदालत में धर्नसिह हाज़िर हुआ, मगर लक्ष्मीचन्द न आया।

मर्यादाराम ने धर्नसिह से कहा—"न मालूम क्यों, लक्ष्मीचन्द अदालत में हाज़िर नहीं हुआ है। तुम उसे बुला लाओ।"

धर्नसिह ने लक्ष्मीचन्द के घर जाकर "दर्वाज़ा ढकेल दिया। दर्वाज़े के पीछे सजाये गये मिट्टी के बर्तन धक्का खाकर टूट गये।

"ओह, धर्नसिह, मेरे दादा-परदादा के जमाने के बर्तन तुमने फोड़ डाले।" लक्ष्मीचन्द ने बाहर आकर कहा। धर्नसिह बर्तनों का मूल्य चुकाने को तैयार हुआ, मगर लक्ष्मीचन्द ने हठ किया कि उसे वे ही पुराने बर्तन चाहिये।

दोनों मर्यादाराम के पास पहुँचे। इस बार लक्ष्मीचन्द ने धर्नसिह पर फ़रियाद की। मर्यादाराम ने फ़ैसला सुनाया—"धर्नसिह, तुम लक्ष्मीचन्द के बर्तन वापस कर दो, मैं तुम्हें तुम्हारा वही हाथी दिलाऊँगा।" धर्नसिह का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। वह अपना सा मुंह लेकर घर लौटा।

"अर्जुन के साथ द्वन्द्व युद्ध करना हो तो तुम्हारा भी राजा का होना ज़रूरी है।" कृपाचार्य के ये शब्द सुनकर कर्ण अपने माता-पिता के नाम बताने से सकुचाने लगा। यह देख दुर्योधन ने सोचा कि कर्ण को अपने पक्ष में लेने का यह अच्छा मौक़ा है। यह सोचकर कर्ण की ओर दुर्योधन ने कृपाचार्य से यों कहा–

"आचार्यजी, शास्त्र यह बताते हैं कि उत्तम क्षत्रिय वंश में पैदा हुए व्यक्ति, महान वीर तथा बड़ी सेनावाले लोगों को राजा कह सकते हैं। कर्ण का अर्जुन के साथ द्वन्द्व युद्ध करने में आपत्ति इसलिए हो कि वह राजा नहीं है, तो मैं इसी क्षण अंग राज्य के अधिपति के रूप में उसका अभिषेक करूँगा।"

दुर्योधन का आदेश पाकर मंत्रवेत्ता पुरोहित आये। सोने का सिंहासन मंगाया गया। स्वर्ण कलशों में पानी लाया गया। पुष्प और अक्षत भी मंगायें गये। दुर्योधन ने कर्ण को सिंहासन पर बिठाकर छत्र और चँवर धारण करा कर, राजा के रूप में उसका अभिषेक किया।

इस कर्मकांड के सामांप्त होते ही कर्ण ने दुर्योधन से कहा–"महाराज, आपसे मैंने राज्य दान में पाया, इसके बदले में मैं आपका क्या उपकार करूँ?"

"मुझे केवल तुम जैसे पराक्रमी की मैत्री चाहिये।" दुर्योधन ने उत्तर दिया।

९. अंग राज्य का अभिषेक

कर्ण का शरीर क्रोध से कांप उठा। परंतु वह कुछ न कह पाया। क्रोध से हांफते आसमान में सूर्य की ओर देखता रह गया। अपने भाइयों के बीच बैठे दुर्योधन भीम से बोला—"भीमसेन, तुम्हारी बातें उचित प्रतीत नहीं होतीं। राजा को सदा हर बलवान से युद्ध करने के लिए तैयार रहना चाहिये। अर्जुन की भी यही बात है। कहा जाता है कि शूरों और नदियों का उद्‌गम कोई बता नहीं सकता। दिव्य लक्षण तथा जन्मजात कवच-कुण्डल वाला कर्ण साधारण जन्मधारी नहीं है। वह केवल अंग राज्य पर ही नहीं बल्कि समस्त पृथ्वी पर शासन कर सकने योग्य पराक्रमी है। मैंने इसको अंग राज्य का अभिषेक किया है, अगर यह बात किसी को पसंद न आवे तो मेरे साथ द्वन्द्व युद्ध करके जय-पराजय का निर्णय कर सकते हैं।"

दुर्योधन के मुँह से यह बात सुनकर प्रेक्षक हाहाकार कर उठे।

द्वन्द्व युद्ध होने के पहिले ही सूर्यास्त हो गया। कुछ लोग कर्ण की, कुछ लोग अर्जुन तथा दुर्योधन की प्रशंसा करते अपने घर चले गये। लेकिन दुर्योधन के लिए

यह सब देखनेवाले कर्ण का पालित पिता सूत अपने हांकनेवाले रथ से उतर आया और अंग देश के राजा कर्ण का अभिनंदन किया। कर्ण ने पुत्रभाव से सूत को प्रणाम किया। सूत ने कर्ण का आलिंगन किया। दोनों की आँखों से आनंद-अश्रु बह उठे।

यह बात प्रकट हो गयी कि कर्ण सूत का पुत्र है। इस पर भीम ने कर्ण से कहा—"सूत-पुत्र! तुम रथ हांकने का काम छोड़ अर्जुन से द्वन्द्व युद्ध करना चाहते हो? यह क्या तुम्हारे लिए उचित है? तुम्हें अंग राज्य के सिंहासन की क्या जरूरत है?"

वह दिन पर्व दिन जैसा था। आज तक अर्जुन उनकी बगल में छुरी बनकर दुख देता था। आज से दुर्योधन के लिए अर्जुन का डर जाता रहा। उस दिन वह निश्चिंत सो गया।

कुछ समय बीत गया। एक दिन प्रातःकाल द्रोण ने अपने शिष्यों को बुला कर पूछा–"तुम लोग मुझे गुरु-दक्षिणा दो।" सबने आचार्य को प्रणाम करके पूछा–"आप आदेश दीजिये, हम उसे पूरा करेंगे।"

"ऐश्वर्य के गर्व में चूर द्रुपद मूर्ख है। उसे पकड़ कर ले आओ और प्राणों के साथ मुझे सौंप दो।" द्रोण ने कहा। आचार्य के आदेश का पालन करने के लिए सभी राजकुमारों ने रथों को तैयार किया। कवच धारण किये, खड्ग और धनुष-बाण ले द्रुपद पर आक्रमण करने के लिए तैयार हो गये। इसके बाद सब द्रोण के पीछे चल पड़े।

पांचालपुर के निकट पहुँचते ही अर्जुन ने द्रोण से कहा–"इसमें से एक भी आदमी द्रुपद को पकड़कर ला नहीं सकते। इनके विफल हो लौटने तक हम पांडव यहीं रहेंगे, इसके बाद हम द्रुपद को पकड़कर लायेंगे।"
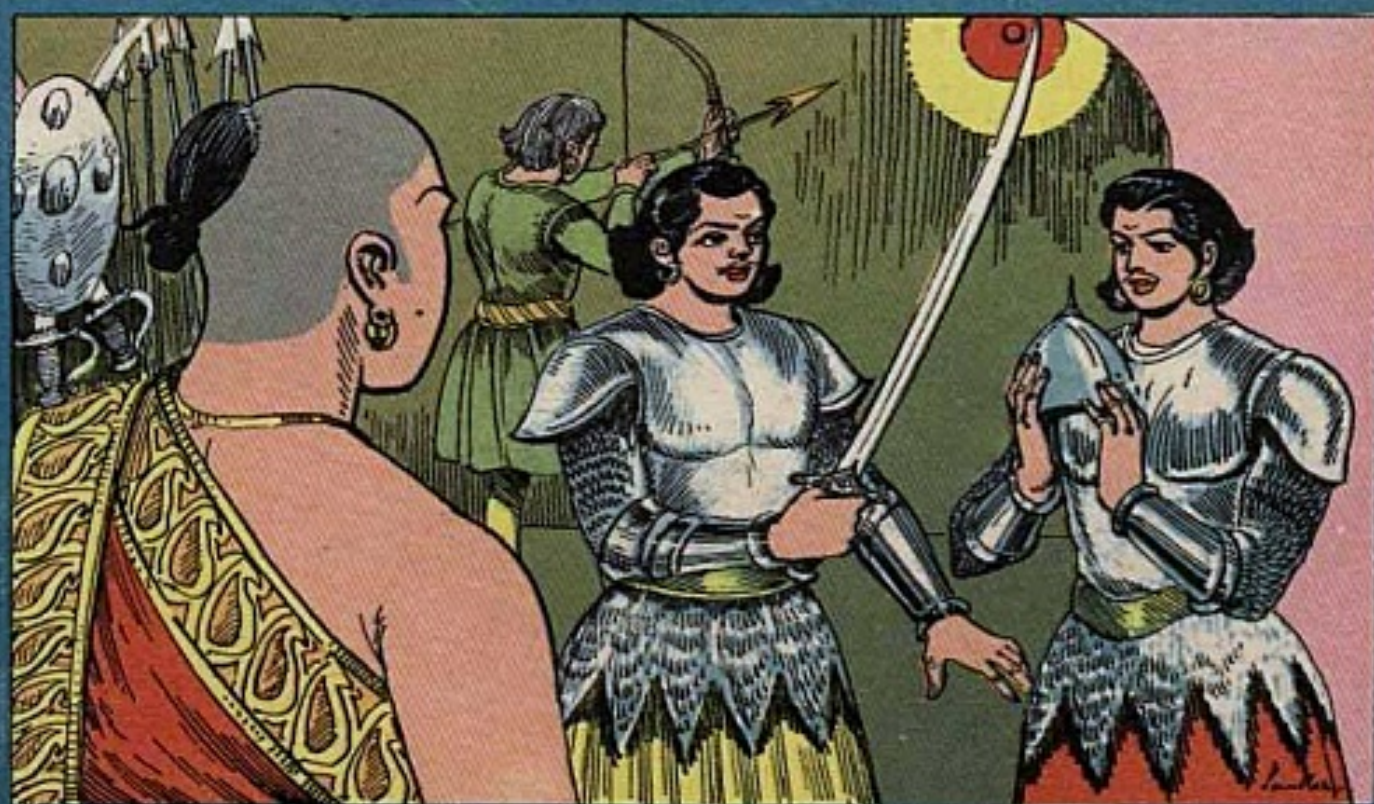
दुर्योधन का दल कर्ण को साथ ले नगर में पहुँचा। राजपथ पर डींग हांकते उनके पांचाल नगर में पहुँचने का समाचार द्रुपद को मिल गया। तुरंत द्रुपद अपनी सेनाओं तथा भाइयों को साथ ले लड़ाई करने आ पहुँचा। कौरव तथा कर्ण थोड़ी देर तक अपना प्रभाव दिखाते रहें, लेकिन आखिर द्रुपद तथा उसकी सेनाओं के हमलों के सामने ठहर न सके और भाग कर पांडवों के यहाँ आ पहुँचे।

इस पर अर्जुन ने द्रोण को प्रणाम किया, युधिष्ठिर की अनुमति ली, भीम को अपने सेनापति तथा नकुल और सहदेव को अपने रथ के पहियों के रक्षक के रूप में नियुक्त कर द्रुपद को पकड़ लाने का वचन दे चल पड़ा।

भीम और अर्जुन ने द्रुपद की सेना पर धावा बोल दिया और उसे तितर-बितर किया। अर्जुन ने घनघोर युद्ध करते अपने रथ को द्रुपद के रथ की ओर आगे बढ़ाया। द्रुपद ने क्रोध में आकर अर्जुन पर भयंकर आक्रमण किया। एक बार द्रुपद को न देख उसकी सेना में खलबली मच गयी। अर्जुन ने द्रुपद के रथ तथा उसके घोड़ों का नाश किया और तलवार लेकर द्रुपद के जुएँ पर कूद पड़ा। इस तरह द्रुपद को बंदी बनाया।

इस बीच भीम, नकुल और सहदेव द्रुपद की भागने वाली सेना पर टूट पड़े और उसका सर्वनाश करने लगे। तब अर्जुन ने जोर से चिल्लाकर उन्हें सचेत किया—"द्रुपद हमारा बंदी हो गया है। हम अपने काम में सफल हुए हैं। द्रुपद हमारा रिश्तेदार है। इसकी सेना का नाश न कीजिये।"

इसके बाद अर्जुन ने द्रुपद के हाथों को रस्सियों से बँधवाया और उसे लाकर द्रोण के हाथों में गुरुदक्षिणा के रूप में

सौंप दिया। द्रोण ने द्रुपद की ओर देखते हुए व्यंग्य से कहा–"पांचाल नरेश, इस वक़्त तुम्हारा कांपिल्य नगर हमारे हाथों में आ गया है। इस समय ही सही, क्या तुम मुझे अपने बचपन के मित्र के रूप में स्वीकार करोगे कि नहीं? लेकिन डरो मत। मैं ब्राह्मण हूँ, शांत स्वभाव का हूँ। अपने बचपन की मैत्री को भूला नहीं हूँ। मैं केवल तुम्हारी मैत्री के लिए ही तुम्हें यहाँ तक लाया हूँ। मुझे राज्य-शासन करनेवालों की मैत्री ज्यादा पसंद है। लेकिन इस वक़्त तुम्हारे पास राज्य नहीं है। मैं तुम्हारी मैत्री के वास्ते आधा राज्य दे देता हूँ। ले लो। गंगा नदी के दक्षिण का सारा प्रदेश तुम्हारा राज्य होगा। उत्तर का भाग मेरा राज्य होगा। हम दोनों सुखपूर्वक राज्य-पालन करेंगे।"

द्रुपद ने द्रोणाचार्य के साथ स्थाई मैत्री के लिए मान लिया। तब द्रोण ने द्रुपद के बंधन खुलवा कर उसे मुक्त किया।

उस दिन से द्रुपद दक्षिण पांचाल का मात्र राजा बनकर रहा। माकंदी तथा कांपिल्य नगर उनकी राजधानियाँ रहीं। द्रुपद ने भली भांति समझ लिया कि सेना के बल पर द्रोण को पराजित करना असंभव है। इसके अलावा संतान की

प्राप्ति की आशा पूरी न हुई। इन दो कारणों से वह देश का भ्रमण करते मुनियों का आश्रय करके घोर तपस्या करने लगा।

द्रोणाचार्य अहिच्छत्र को राजधानी बनाकर शासन करने लगे।

एक वर्ष बीत गया। धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बनाने का निश्चय किया। युधिष्ठिर साहसी और सहनशील स्वभाव के थे। सेवकों के प्रति दया रखनेवाले थे।

युवराज के रूप में शासन-कार्य में युधिष्ठिर ने अच्छा यश प्राप्त किया। यहाँ तक कि वे पांडु राजा से भी ज्यादा समर्थ राजा कहलाये।

भीम ने बलराम के शिष्य बनकर गदा और खड्ग-युद्ध में बड़ी निपुणता प्राप्त की।

अर्जुन ने धनुष को दृढ़ता के साथ धारण कर उस हाथ पर चोट लगने पर भी धनुष को छोड़े बिना युद्ध करने का अभ्यास किया। द्रोण अर्जुन की बाण-विद्या पर इसलिए प्रभावित थे कि वह अत्यंत वेग और कुशलता के साथ बाण चला सकता था। सब प्रकार के आयुधों के प्रयोग में वह चतुर था।

"चाहे जैसे भी महान व्यक्ति तुम्हारे साथ युद्ध करने आवे, उनके प्रति तुम्हारे मन में आदर का भाव होते हुए भी अनिवार्य रूप से युद्ध करो।" द्रोण ने अर्जुन को यही सलाह दी।

अर्जुन द्रोणाचार्य के प्रेम का पात्र बना। कौरव राज्य के शत्रु तथा अपने पिता का भी धिक्कार करनेवाले राजा सौवीर, विमल, दत्तामित्र तथा उसके भाई को मार डाला। उसने अकेले ही रथ पर जाकर पूर्वी देशों के दस हज़ार राजाओं को हरा दिया। अनेक पड़ोसी राजाओं को

कौरव राज्य के सामंत बनाये और उनसे असंख्य धनराशियाँ लेकर हस्तिनापुर पहुँचा दिया।

नकुल और सहदेव ने भी कौरवों के अनेक शत्रुओं को हरा कर अपार धन लाकर खज़ाने को भर दिया।

पांडवों की ख्याति इस तरह चारों दिशाओं में फैलते देख धृतराष्ट्र सहन नहीं पाया। वह यह निर्णय न कर सका कि उन्हें ऊपर उठने दे या उनका अंत करें। इसलिए कणिक नामक अपने एक वृद्ध ब्राह्मण मंत्री की सलाह मांगी। कणिक ने सलाह दी कि दुश्मन का अंत किसी भी उपाय से करे तो वह अपराध नहीं कहलायगा।

धृतराष्ट्र की भांति दुर्योधन ने भी कर्ण, शकुनि, दुश्शासन वगैरह से परामर्श करके पांडवों का अंत करने का निश्चय किया। जब उसने यह निश्चय अपने पिता धृतराष्ट्र को सुनाया तब उसने भी मान लिया। सबने मिलकर यह योजना बनायी कि पांडवों को वारणावतपुर (काशी) में भेजकर वहाँ पर लाख से निर्मित भवन में उन्हें जला डाले।

धृतराष्ट्र का आदेश पाकर उसके मंत्री एक एक करके पांडवों के पास आये और

पांडवों के सामने वारणावतपुर के सौंदर्य का वर्णन करने लगे। साथ ही उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे एक बार अवश्य ही उस नगर को देखें।

इसके बाद धृतराष्ट्र ने पांडवों को बुलाकर कहा–"बेटे, सब लोग कहते हैं कि वारणावतपुर को देखने के लिए हज़ार आँखें चाहिये। शीघ्र ही वहाँ पर शिवजी का उत्सव भी होने जा रहा है। अगर तुम लोग वहाँ जाना चाहते हो तो अपनी माँ को साथ लेकर जाओ और कुछ दिन वहाँ बिताओ। इसके बाद हस्तिनापुर लौट आओ।" युधिष्ठिर ने भांप लिया कि एक प्रकार से यह देश निकाला सज़ा है। इसलिए उसने कोई प्रसन्नता प्रकट न की।

इस बीच दुर्योधन ने पुरोचन नामक एक शिल्पी को एकांत में ले जाकर उससे यों कहा–

"मेरे पिता पांडवों को वारणावतपुर में भेज रहे हैं। तुम इसके पहले ही रथ पर वहाँ जाकर लाख इत्यादि वस्तुओं से एक सुंदर मकान बनाओ, जिसे आसानी से जला सके। उसमें जरूरी सारे सामान पहुँचा दो। देखने में ऐसा रहे कि लोग चकित हो जावें। पांडव उस घर में कुछ दिन तक बिना किसी प्रकार की शंका के बिता दे। तब समय पाकर एक दिन आधी रात में उसमें आग लगा दो। वे सब उस आग में जल कर भस्म हो जायें, तब मैं निश्चिंत रह सकता हूँ। इसके बाद मैं राजा बनकर तुम्हारा कैसे उपकार करूँगा, तुम खुद देखोगे ही।"

इस पर पुरोचन ने मान लिया। पुरोचन के लिए दुर्योधन ने तेज़ दौड़नेवाले घोड़ों व रथ का इंतज़ाम किया और उस पर उसे वारणावतपुर में भेज दिया। पुरोचन वहाँ पर पहुँचते ही अपने काम में लग गया।

[९]

ट्रान्सवाल की विधान सभा ने एशिया वासियों के रिजिस्ट्रेशन संबंधी जो बिल पास किया, उसका भारतवासियों ने खण्डन किया। उनकी ओर से गांधीजी तथा हेच. ओ. अली इंग्लैण्ड गये। गांधीजी वहाँ पर छे सप्ताह तक रहकर दादाभाई नौरोज तथा भारतीयों के प्रति स्नेह रखनेवाले ब्रिटीश पार्लमेंट के सदस्यों और पत्रकारों से भी मिले। ब्रिटीश कलोनियल सचिव से मिलकर बातचीत भी की। लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। साथ ही यह घोषणा भी हुई कि १ जुलाई १९०७ से यह बिल अमल में भी आनेवाला है। इस क़ानून का विरोध करने का गांधीजी ने पहले ही निश्चय कर लिया था। इस आन्दोलन को चलाने का मौक़ा भी आ गया।

सितंबर १९०६ में एम्पाइर थियेटर में एक ऐतिहासिक सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में भारतीयों ने यह शपथ खायी थी कि उक्त कानून का विरोध करेंगे। गांधीजी ने पुनः उन लोगों से शपथ इसलिए करायी थी कि जो लोग इसका विरोध करने से सकुचाते हैं, वे बच सकते हैं।

जोहान्सबर्ग में एक बड़ी सार्वजनिक सभा हुई। सरकार की तरफ़ से उस सभा में विलियम हास्केन ने भाग लिया। उसने अपने भाषण में कहा—"आपका यह आन्दोलन नहीं चल सकता। ट्रान्सवाल का प्रत्येक गोरा आदमी इस क़ानून का समर्थन करता है। सरकार शक्तिशाली है। उसका विरोध करने का मतलब दीवार से सर फोड़ने के बराबर है।" इस भाषण का गांधीजी ने अनुवाद किया था।

का बहिष्कार करने का आदेश दिया। सब जगह ये इश्तहर लगाये गये—"भारतवासियो, स्वतंत्र रहिये।"

पर्मिटवाले दफ़्तरों की पिकेटिंग के लिए गांधीजी ने स्वयंसेवकों का प्रबंध किया—स्वयंसेवक दफ़्तरों के सामने खड़े हो रजिस्ट्री कराने लिए आनेवाले भारतीयों को रजिस्ट्री कराने से मना करने लगे। ज़बर्दस्ती या बेइज्ज़ती भी नहीं करते थे। पुलिस अगर उन्हें गिरफ़्तार करने आवे, तो खुशी से स्वीकार करने लगे।

वास्तव में भारतीयों के पर्मिट लेने से रोकने के लिए ज़बर्दस्ती करने की ज़रूरत ही न थी। क्योंकि ज़बर्दस्त लोकमत उनके साथ था। कुछ लोगों ने रात के वक़्त आकर रजिस्ट्री करा ली, फिर भी पिकेटिंग सफल रही। सरकार ने रजिस्ट्रेशन की अवधि बढ़ायी, फिर भी नवंबर के अंत तक ५११ भारतीय ही रिजिस्ट्री में दर्ज हुए।

२६ दिसंबर १९०७ तक इस जाति-फ़रक बिल को इंग्लैंड से राजा की अनुमति भी प्राप्त हुई। दूसरे दिन जोहान्सबर्ग के सम्मेलन में भाषण देते हुए गांधीजी ने कहा था—"भारतीयों की राजभक्ति के

इस भाषण का जवाब भी तुरंत मिल गया। मुहम्मद कछालिया नामक व्यपारी ने यों कहा—"सरकार की ताक़त को मैं जानता हूँ। वह हमें क़ैद कर सकती है, हमारी जायदाद ज़ब्त कर सकती है, हमें देश निकाला सजा दे सकती है, फाँसी दे सकती है, यह सब हम सहन कर सकते हैं, मगर इस क़ानून को नहीं।"

सभी प्रमुख शहरों में पर्मिट दफ़्तर खोले गये। प्रत्येक भारतीय को रजिस्ट्री करने के लिए ३१ जुलाई १९०७ तक मीयाद दी गयी। गांधीजी के द्वारा स्थापित अहिंसा विरोधी संघ ने पर्मिटवाले दफ़्तरों

लिए यह विषम परीक्षा है। ब्रिटीश सरकार को यह फ़ैसला करना होगा कि उसे हिन्दुस्तान चाहिए अथवा उपनिवेश?" ट्रान्सवाल के मंत्रि-मण्डल में भारतीयों के व्यवहार देखनेवाले जनरल स्मट्स ने भारतीयों की धमकी की परवाह नहीं की।

रिजिस्ट्री न कराने की क़ैफ़ियत देने के निमित्त २८ दिसंबर को गांधीजी तथा उनके २६ अनुयायी अदालत में बुलाये गये। यह आदेश ज़ारी हुआ कि २५ दिनों के अन्दर उन्हें ट्रान्सवाल को छोड़कर चले जाना होगा। उन लोगों ने उस आदेश की परवाह न की। १० जनवरी १९०८ को क़ैफ़ियत तलब हुई। उन लोगों ने अपने को निर्दोषी नहीं बताये। वे सज़ा भोगने के लिए तैयार थे। सब के नेता गांधीजी थे, इसलिए उन्होंने पूछा कि उन्हें अधिक से अधिक दण्ड दिया जाय। पर उन्हें दो महीने की मामूली सज़ा हुई।

गांधीजी तथा उनके प्रमुख अनुयायियों को जेलखाने में बंद करने के पश्चात यह आन्दोलन दबा नहीं, बल्कि सभी भारतीय जेल जाने के लिए उत्सुक हो उठे। लोगों में जेल के प्रति डर जाता रहा। जेल को लोग "राजा एड्वर्ड का होटल" कहने लगे। जोहान्सबर्ग के जेल में सिर्फ़ ५० लोगों के लिए जगह थी, मगर उसमें १५५ सत्याग्रहियों को क़ैद किया गया।

"ट्रान्सवाल लीडर" नामक पत्र भारतीयों के समर्थन में लेख प्रकाशित किया करता था। उसका संचालक अल्बर्ट कार्टराइट गोरा आदमी था। उसने जेल जाकर गांधीजी से मुलाक़ात की और कहा कि उसने भारतीयों के संबंध में जनरल स्मट्स से बात की है। उसने मुझसे बताया है कि अगर सभी भारतवासी अपने नाम रजिस्ट्री करने के लिए तैयार हो तो "एशियावासियों का रजिस्ट्रेशन

क़ानून" वापस लिया जायगा और इस संबंधी मसविदा भी एक दम तैयार है।

इसके दो दिन बाद गांधीजी क़ैदी के रूप में रहते हुये ही प्रिटोरिया जाकर स्मट्स से मिले। स्मट्स ने भारतीयों की प्रशंसा की और अपनी असहाय स्थिति का परिचय दिया। उसने यह वादा भी किया कि यदि भारतीय अपने नाम रजिस्ट्री करा ले। क़ानून रद्द कर दिया जायगा तो उस समझौते में गांधीजी के द्वारा सुझाये गये संशोधन स्वीकार कर लिये गये।

"मुझे अब कहाँ जाना होगा?" गांधीजी ने पूछा। इस पर स्मट्स ने हँसकर उत्तर दिया था—"कल सुबह मैं सब क़ैदियों को रिहा कर दूंगा।"

तब तक शाम के सात बज चुके थे। गांधीजी के पास एक कौड़ी भी न थी। गांधीजी स्मट्स के सचिव से रेल-किराये के लिए कुछ रक़म उधार लेकर रेल-स्टेशन की ओर दौड़ पड़े। जोहान्सबर्ग जानेवाली आख़िरी गाड़ी पकड़ ली। अपने केन्द्र में पहुँच कर गांधीजी ने सभी भारतीयों का समावेश किया और उन्हें यह बताया कि उन्होंने जनरल स्मट्स के साथ कैसे एक अनधिकार समझौता कर लिया है। कुछ लोगों ने गांधीजी की आलोचना की। आलोचकों ने पूछा—इसकी क्या गैरंटी है कि सरकार अपनी का बात पालन करेगी? गांधीजी ने उन्हें समझाया कि प्रत्यर्थी की बात पर विश्वास रखना सत्याग्रही का धर्म है। यह भी बताया कि अगर सरकार अपने वादे का पालन न करेगी तो फिर से सत्याग्रह किया जायगा।

एक पठान ने गांधीजी पर दोषारोपण किया—"१५ हज़ार पाउंड घूस लेकर आप जनरल स्मट्स के हाथ बिक गये हैं।" यह धमकी दी कि जो भारतीय अपना नाम रजिस्ट्री करा लेगा, उसे मार डालूंगा।

९६. कोपेन होगेन की 'जलकन्या'

होन्स क्रिस्टियन आण्डर्सन नामक डेन्मार्क के एक सुप्रसिद्ध लोककथा लेखक ने एक कहानी में लिखा कि एक जलकन्या ने एक राजकुमार से प्यार किया है। इस कल्पना सुंदरी के रूप की मूर्ति एड्वर्ड एरिक्सन नामक शिल्पी ने गढ़ी। उसे कोपेन हेगेन (डेन्मार्क) के बंदरगाह में प्रतिष्ठित की। यह जलकन्या ऐसी प्रतीत होती है कि मानों जल से तभी शिला पर पहुँच गयी हो। कहा जाता है कि डेन्मार्क में इस प्रतिमा के जितने फोटो लिये जाते हैं, उतने अन्य किसी के नहीं।

Photo by K. S. Vijayaker
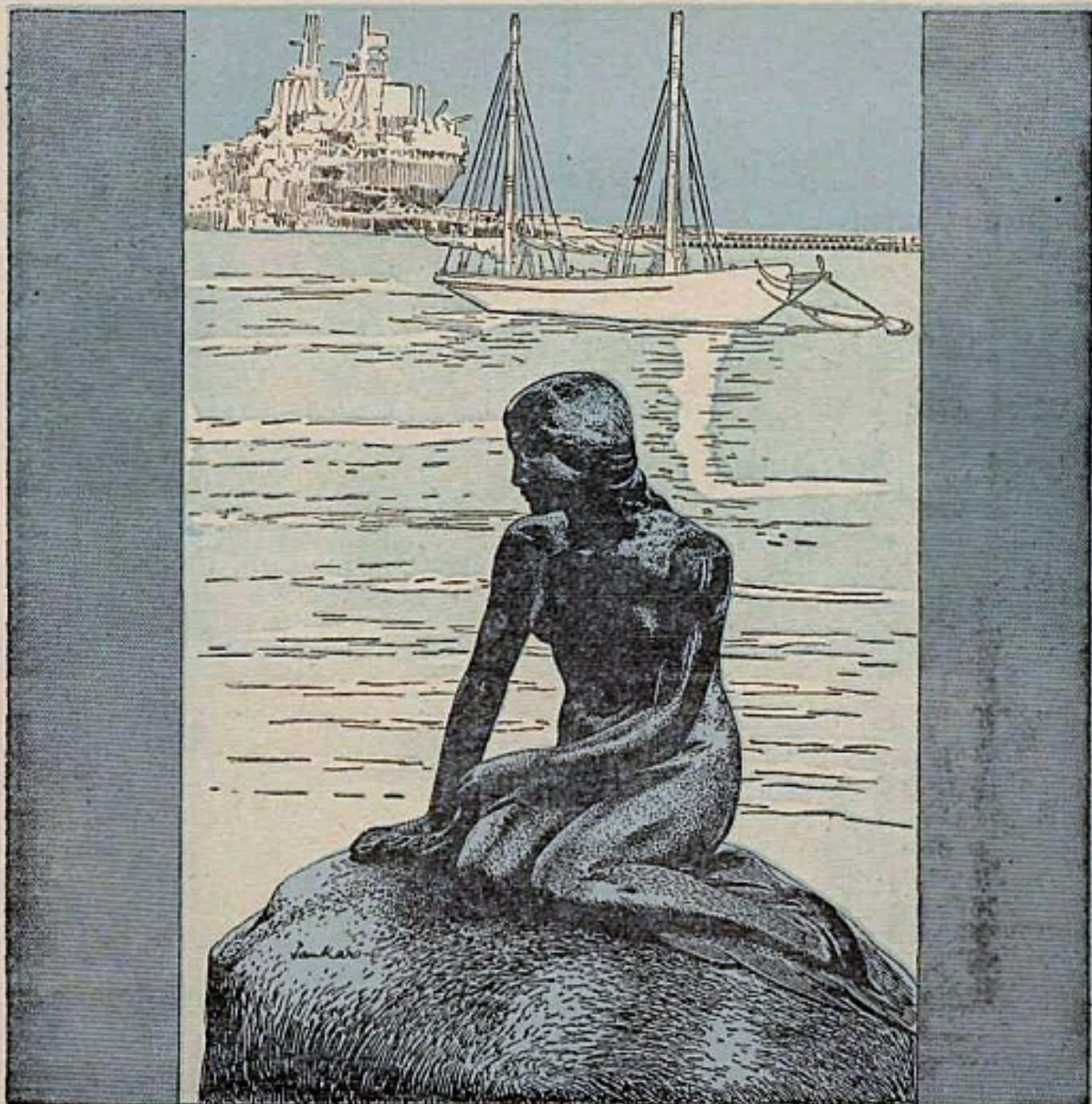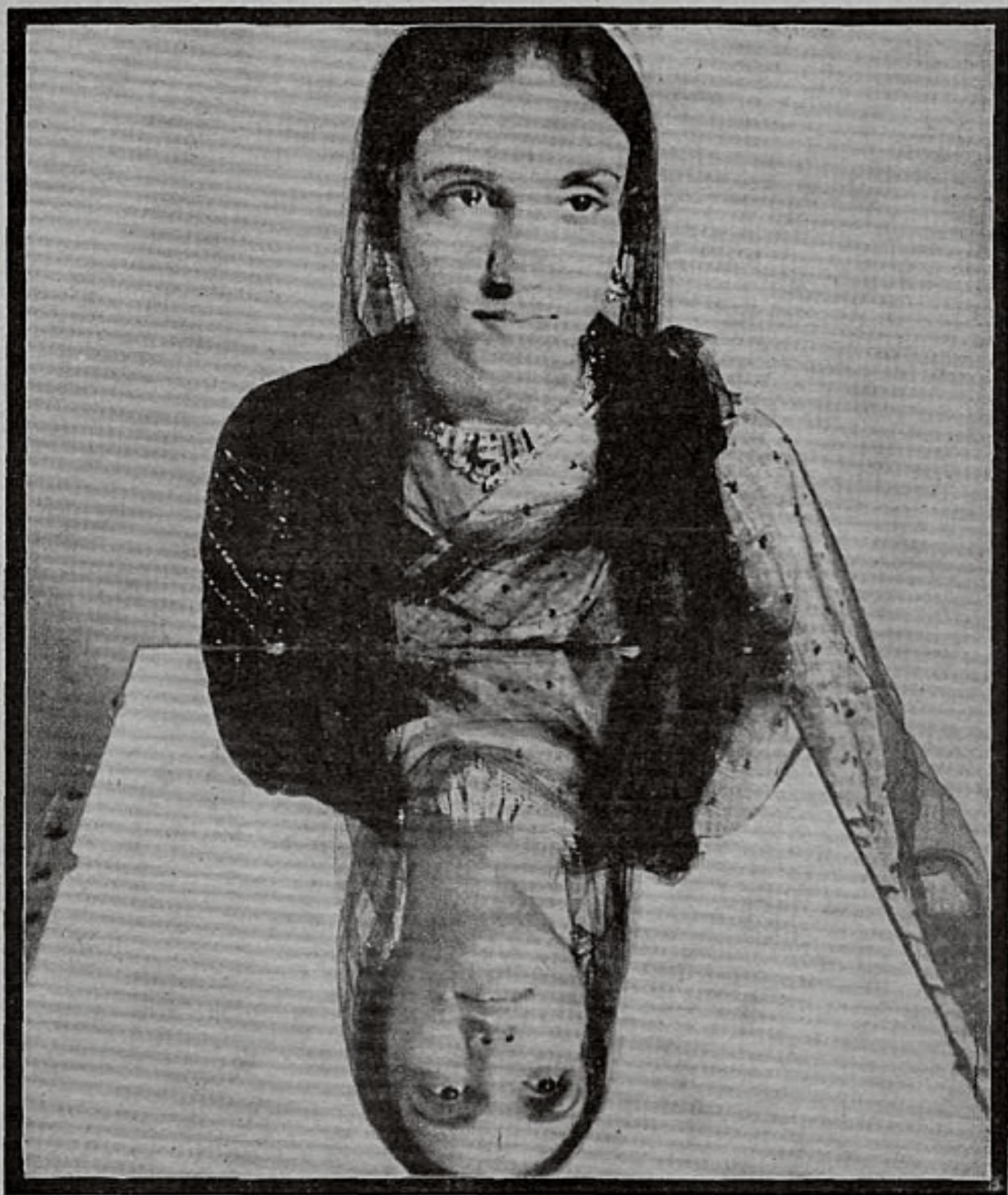
पुरस्कृत परिचयोक्ति

'यह उदासी इंतज़ार की निशानी'

प्रेषिका : श्रीमती देविंदर छाबा

Photo by K. S. Vijayaker
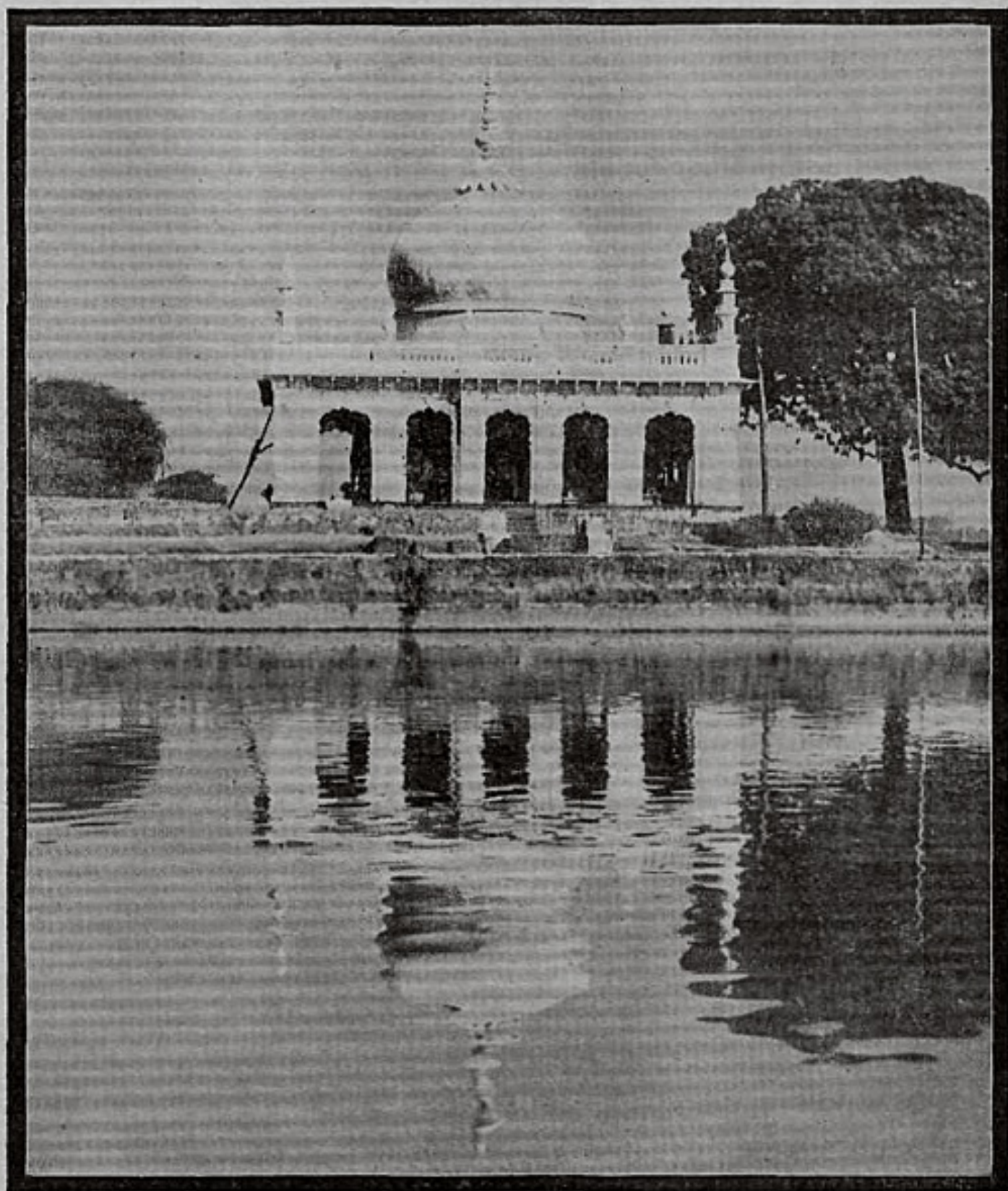
पुरस्कृत परिचयोक्ति

'यह मजार मुहब्बत की इक कहानी है'

प्रेषिका : श्रीमती देविंदर छाबा

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

फ़रवरी १९७० :: पारितोषिक २०)
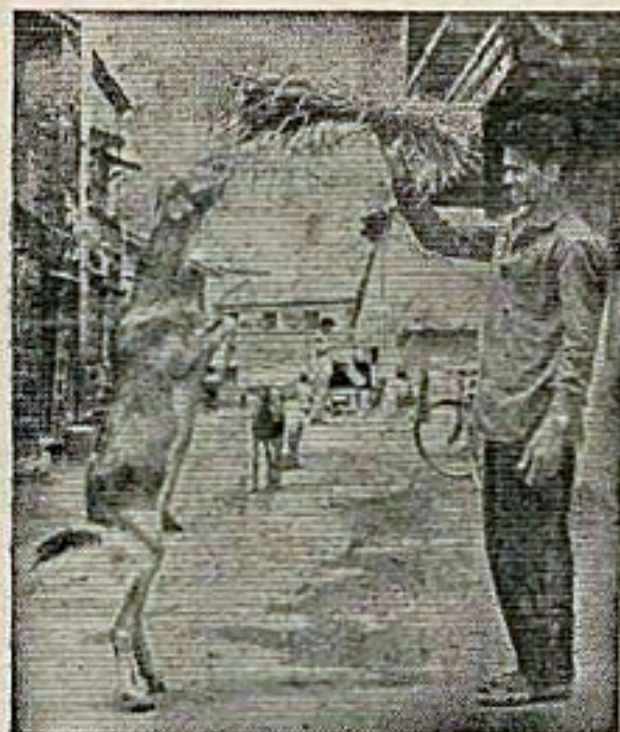
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें!

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख १० दिसम्बर १९६९ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

दिसम्बर – प्रतियोगिता – फल

दिसम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनकी प्रेषिका को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: यह उदासी इंतज़ार की निशानी है।

दूसरा फ़ोटो: यह मजार मुहब्बत की इक कहानी है।

प्रेषिका: श्रीमती देविन्दर छाब्रा,

रेल्वे क्वार्टर्स नं. ई. ४१ बी, दक्षिण रेल्वे कोलनी, लाइन पार, मुरादाबाद (उ.प्र.)

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

अरे दी दी।
जरा इसे चखो तो।
यह तो बिल्कुल रसभरी जैसा है। नींबू का पिपरमिंट और अनानास का पिपरमिंट-कितने प्रकार के-लाल, नीला, पीला आदि रंगों में। वाह भई वाह। पारले के फ्रुट ड्रॉप पिपरमिंट खाने में कितना मज़ा आता है।
पारले
फ्रुट ड्रॉप पिपरमिंट
कितना मज़ेदार ज़ायका
पारले का पैकेट खरीदो आज!
PARLE
FRUIT DROPS
everest/510a/PP HN

पालन पोषण सही कीजिए ; बच्चों को बोर्नविटा दीजिए !

बच्चों का धर्म है निरीहता
उसका पथ है निरीहता
निरीहता की न कोई
सीमा होती, न जाति।
निरीहता ही उसके लिए
अल्लाय है, कृष्ण है और है
यीशू मशीह जो
उसका स्रष्टा है,
जो सत् है, चित है,
फूलों की बहार सत्य के
विस्फोट के
समान पुराने क़िले में आयी।
नन्हा फ़रिश्ता
ईस्टमेनकलर
बी. नागिरेड्डी (राम और श्याम के
निर्माता) कृत एक
विजया इन्टरनेशनल फ़िल्म।
निर्देशक : टी. प्रकाश राव
संगीत : कल्याणजी आनन्दजी
कहानी : तुरैयूर के. मूर्ति
संवाद : इन्दरराज आनन्द
गीत : साहिर

CHANDAMAMA (Hindi) DECEMBER 1969 Regd. No. M. 5452

महाभारत